KASHYAP SAMACHAR

कश्यप समाचार

Oct 94





Swami Lakshman Ji Iswar Swarup
(1908 1991)
One of the Greatest saints and scholar
of Kashmir Shaivism

कश्यप समाचार (दिवाली विशेषांक)

वर्ष : 5 अंक : 8,9

हिंदी-कश्मीरी भाग

संपादक
डॉ रतन लाल शांत
सह-संपादक
पृथ्वी नाथ 'सायिल'
पृथ्वी नाथ 'मधुप'
प्यारे हताश

कश्मीरी पंडित सभा (पंजीकृत) अंबफला, जम्मू द्वारा प्रकाशित। फोन : 45470

एकता से सभी संभव यहां

'कश्यप समाचार' के जन्माष्टमी अंक को हमारे पाठकों ने जिस तरह प्रोत्साहन दिया उस से हमें बहुत हिम्मत मिली है। हम जानते हैं कि उस अंक की सामग्री तथा छपाई में त्रुटियां रह गई हैं जिसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष के इस निर्णय के कारण कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर पत्रिका का विशेष अंक लोकार्पण करना है, हमें थोड़े ही समय में सामग्री जुटानी पड़ी, प्रेस का अनुभव भी बहुत सुखद नहीं रहा। लक्ष्य हमारे सामने था कि विशेषांक समय पर लोकार्पित हो और प्रभु की दया से ऐसा ही हुआ। हमारी त्रुटियों की उपेक्षा करके हमारे सुधी पाठकों एवं विद्वानों ने इस अंक के बारे में जो राय व्यक्त की है उस से हमारा हौसला बढ़ा है। पाठकों के आलोचनात्मक - प्रशंसात्मक पत्रों की भरमार ने हमें अपने कर्तव्य के प्रति अधिक सचेत भी किया है। हमारा संकल्प है कि "कश्यप समाचार" हर लिहाज से एक स्तरीय पत्रिका के रूप में अपने पाठकों को कश्मीरी संस्कृति एवं साहित्य से अवगत कराती रहे। हमारा यह संकल्प तभी पूरा होगा जब बिरादरी का हर सदस्य इस पत्रिका के साथ जुड़ कर इसे संवारने तथा प्रचारित करने में अपना योगदान दे।

●

हमारे लिए अपार हर्ष की बात होनी चाहिए कि 27 अगस्त, 1994 को सभा की ओर से शोभा यात्रा निकाली गई और 29 अगस्त को सभा के प्रांगण में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर जम्मूवासी कश्मीरी पण्डितों ने जिस एकता का परिचय दिया वह एक ऐतिहासिक घटना है। इसी प्रकार का परिचय 14 सितम्बर, 1994 को "कश्मीरी पंडित बलिदान दिवस" मनाते समय भी दिया गया। जम्मूवासी कश्मीरी पंडितों का शीष, एक साथ, अमर शहीदों की पावन स्मृति में, शत-शत नमन के लिए झुक गया। प्रतिज्ञा की गई कि शहीदों ने जो रक्त बहाया है, उसे वृथा नहीं होने दिया जायेगा।

●

प्रस्तुत अंक दशहरा अंक के रूप में आप के सम्मुख है। इसमें दशहरा के महत्त्व, श्रीराम के चरित तथा श्रीराम संबन्धी साहित्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। आशा है अंक के संबन्ध में हमारे पाठक अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य ही अवगत करायेंगे। विद्वान लेखकों तथा साहित्यकारों से अनुरोध है कि भविष्य में अपनी रचनाएं, कविताएं, लेख, कहानी, आदि. अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

हमारी कामना है कि "कश्यप समाचार" हमारी संस्कृति और परंपरा का प्रतीक बने।

—डा० बालकृष्ण रैना

विजय दशमी का महत्त्व

(डॉ० रैना संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति के अधिकारी विद्वान हैं। भारतीय साहित्य और साहित्यशास्त्र इनके प्रिय विषय हैं। तीन दशक से अधिक जम्मू काश्मीर राज्य के महाविद्यालयों में संस्कृत भाषा और साहित्य का कुशल अध्यापन करके गत वर्ष सेवा-निवृत्त हुए हैं।)

भारत की पुण्यभूमि पर प्राचीनकाल से यह पावन दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। 'दशहरा' शब्द की व्याख्या शास्त्रों में एवं वर्णित है कि इस दिन महर्षि पुलस्त्य के पुत्र दशकन्धर (दस सिरों वाले) अत्याचारी रावण पर विजय प्राप्त करके रामचन्द्र जी उसका वध करते हैं। अन्याय एवं अत्याचार का वातावरण लुप्त हो जाता है। चारों ओर विजय दुन्दुभि बजने लगती है। इसी कारण इस दिवस को 'विजय-दशमी' के नाम से भी पुकारा जाता है।

ज्योतिर्निबन्ध में लिखा है कि :—

"आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स काल विजयो ज्ञेयः सर्वकार्यार्थ सिद्धयें" ॥

अर्थात आश्विन-शुक्ल पक्ष की दशमी के सायंकाल में तारा उदय होने के समय 'विजय-काल' होता है। इससे स्पष्ट होता है कि रावण की पराजय तथा श्रीराम जी की विजय इसी समय हुई थी। यह दिवस समस्त शुभकार्यों को सिद्धि देने वाला माना गया है। इस दिन को समय-२ पर अत्याचारियों को दमन करने का एक महत्त्वपूर्ण अवसर माना गया है। हम आर्यों का भी विशेष कर्तव्य है कि हम भी इस दिवस की विशेषता ध्यान में रखकर एकत्रित होकर अनार्यों (देशद्रोहियों) का समूल नाश करने का उद्यम करें। यह दिन इस बात का स्मरण कराता है कि सीता माता पृथ्वी की पुत्री होती है। अत्याचारी उस पर आधिपत्य जमाने के लिए कोशिश करते हैं पर उनके प्रयास को विफल बनाने के लिए दशरथ पुत्र ने जिन उपायों का आश्रय लिया है उन से यह काल-उत्तम 'विजय-काल' कहलाता है।

इस दिन के उपलक्ष्य में प्राचीनकाल से शमी वृक्ष का पूजन विजय के प्रतीक रूप में किया जाता रहा है। इस कारण समस्त विजयेच्छुक लोग विजय प्राप्ति के लिए इस वृक्ष की अर्चना करते हैं और इस मन्त्र का उच्चारण करते हैं :—

"अश्मन्तक महावृक्ष महादोषनिवारक।
इष्टानां दर्शनं देहि शत्रूणां च विनाशनम्" ॥

इस वृक्ष की उत्कृष्टता का विवरण पुराणों में उपलब्ध होता है कि जब दुर्योधन पाण्डवों को बारह वर्ष बनवास का आदेश देता है और उन्हें एक वर्ष अज्ञातवास भोगना पड़ता है, तो अर्जुन अपना धनुषबाण शमी वृक्ष पर रखकर राजा विराट के घर में अज्ञातवास के लिए प्रवेश करता है। एक दिन

हम आर्यों का भी यह विशेष कर्तव्य है कि हम भी इस विशेष दिवस पर एकत्रित होकर अनार्यों (देश-द्रोहियों) का समूल नाश करने का उद्यम करें।

राजा विराट के पुत्र के साथ अर्जुन गायों की रक्षा के लिए शमीवृक्ष पर स्थित धनुषबाण को अपने साथ उठा ले जाता है और शत्रुओं पर इसी वृक्ष से विजय पाने का वर प्राप्त करता है। इसी तरह श्रीरामजी को भी शमीवृक्ष पर अस्त्रों को रखने से बिजयी होने का वर इसी वृक्ष से प्राप्त होता है।

वास्तव में जब दुष्टों का बलात्कार, अधर्म एवं प्राबल्य जगत में फैलता है तो उनका दमन करने के लिए अवश्य कोई जन्म धारण करता है। इस बात की पुष्टि गीता जी से प्रमाणित होती है :-

"यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिभवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्" ॥

इसके अतिरिक्त ग्रन्थों में वर्णित है कि :— "कारणेन विना न कार्योत्पत्तिः" अर्थात बिना कारण कार्य की उत्पत्ति नहीं होती है। इस परिप्रेक्ष्य में 'सप्तशती' ग्रन्थ में इस बात का प्रमाण मिलता है कि जब देवगण महिषासुर राक्षसों के अत्याचार से दुःखी एवं व्याकुल होते हैं तो सब मिलकर महामाया की आराधना करते हैं। देवी महामाया देवताओं को वर देती है कि आश्विन-शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक दुर्गापूजा एवं व्रत रखना अनिवार्य है। इससे आपकी मनोकामना सिद्ध होगी। ऐसा करने के उपरान्त महामाया विराट् स्वरूप धारण करके महिषासुर आदि राक्षसों का संहार करके देवताओं को आंतक तथा दुःख से मुक्त करती है। देवता प्रसन्नता स्तुति और गान करते हैं। इसका उल्लेख सप्तशती में मिलता है कि :—

"ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भर मानसाः
बभूवुर्निहते तस्मिन गन्धर्वा ललितं जगुः।"

इससे स्पष्ट है कि दुष्टों का संहार करने के लिए अवश्य कोई कारण बनता है। इसी तरह प्रकाण्ड पण्डित पुलस्त्य के मूर्ख अत्याचारी पुत्र रावण का वध करके श्रीरामचन्द्र जी जगत को भीषण संकट, अधर्म और अत्याचार से मुक्त कराते हैं। □

नई प्रेरणा

कश्मीरी पंडित सभा के लिए यह वर्ष दो घटनाओं के कारण ऐतिहासिक महत्त्व का है। एक है जनतांत्रिक निर्वाचन जिसमें हजारों भाइयों बहनों ने मतदान करके सभा के अध्यक्ष का चुनाव किया। चुनाव के बाद चुनाव के दिनों की मुकाबिले की भावना समाप्त हुई और सब लोग भेद-भाव भुलाकर सभा के कार्यक्रमों को सफल बनाने में जुट गए। इस प्रकार हमने मानसिक परिपक्वता का परिचय दिया, जिस पर पूरी जाति को संतोष होना चाहिए। दूसरी घटना थी वर्षों बाद जन्माष्टमी का त्यौहार शान और गंभीरता से मनाया गया - सभा के नए प्रांगण में। कार्यक्रम में सादगी और भाषणों में विद्वत्ता थी। प्रो० कैलाश मेहरा साधु के मनोहर भजनों से वातावरण जीवंत हो उठा। आशा की जानी चाहिए कि इस से हमें आगे बढ़ने की और प्रेरणा मिलेगी।

—डॉ गौरी शंकर डासी

राम कथा में आदर्श और यथार्थ

(डॉ० गौरी शंकर डासी कश्मीर के हिंदी लेखकों की नयी पीढ़ी के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। मूलतः कवि हैं, पर गद्य रचनाओं से भी आलोचकों-पाठकों को प्रभावित किया है। आजकल राजकीय एम० ए० एम० कालेज में हिंदी के प्राध्यापक हैं)

अन्य प्राचीन सभ्यताओं और संस्कृतियों की तरह भारत भी आदर्शों का देश रह चुका है। समाज को सुसंस्कृत और सुदृढ़ बनाने के लिए आदर्शों का चयन और संकलन किया जाता रहा है क्योंकि विभिन्न सभ्यताओं का विकास भी विभिन्न आदर्शों के साथ होता आया है। आदर्श-प्रियता के कारण ही राम कथा की लोकप्रियता दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापक स्तर पर अबाध रूप से आज तक स्थिर रही है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में राम कथा का प्रचलन झोंपड़ी से लेकर महलों तक है। प्रत्येक भारतीय मर्यादा पुरुशोतम राम के आदर्श रूप से परिचित है। यहां तक कि इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम देश में भी राम लीला परम्परागत रूप से मनाई जाती है। कारण यही है कि राम एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श योद्धा, आदर्श नीतिज्ञ, आदर्श ज्ञानी और आदर्श मानव का साक्षात रूप है। जन सामान्य की आकांक्षाओं के अनुरूप राम में किसी प्रकार की कमी या कमज़ोरी नहीं है। अगर कोई है भी, तो केवल नरदेही के रूप में ही है। इसी तरह सीता एक आदर्श भारतीय नारी और पत्नी है जबकि लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई हैं।

राम कथा का प्राचीनतम स्रोत बालमीकि रामायण है जिस की प्रामाणिकता पर आधुनिक युग में आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे सुलझे हुए विद्वानों ने प्रश्न चिह्न लगाया है। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' में उनका कथन है कि वाल्मीकि रामायण के प्रथम (बाल) और अन्तिम (उत्तर) काण्ड परिवर्तित और संशोधित लगते हैं, जहां तक भाषा और विषय का सम्बन्ध है। इन दो काण्डों की भाषा बीच के पांच काण्डों की भाषा से भिन्न और बाद की लगती है। इन्ही दो काण्डों में राम को भगवान या अवतार बताया गया है। बीच के पांच काण्डों में राम के अवतार या प्रभु होने का कोई संकेत नहीं किया गया है।

ऋषि वाल्मीकि राम के सम सामयिक थे, इस में कोई सन्देह नहीं है। राम के प्रति उनका दृष्टिकोण निष्पक्ष, स्वतन्त्र या पूर्वाग्रह रहित हो, यह आवश्यक नहीं है। इसीलिए राम कथा का परिवर्द्धन और संशोधन समय के यथार्थ की मांग के अनुरूप ही किया गया होगा। यहां तक कि जैन कवियों ने भी राम कथा का सहारा लेकर 'पउम चरिऊ' (पद्म-चरित) नामक महाकाव्य लिख डाला और अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उसमें संशोधन करके यह बताया कि सीता-समाधि के बाद राम जैन आचार्यों से दीक्षा लेकर जैन मुनि बन जाते हैं।

इंद्रभोग के बाद अहल्या को पत्थर बनाकर गौतम ऋषि ने अपने गोत्र की वंश परंपरा को अवरुद्ध किया था। राम ने अहल्या का उद्धार करके इस गोत्र की परंपरा को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान किया था। यह राम का न्याय था।

तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में राम तो पूर्ण ब्रह्म हैं। वह स्वयं लीला करने के लिए आये हैं। राम से 'शिव द्रोही मम द्रोही' कहलवाकर तुलसी ने शैवों और वैष्णवों के आपसी विवाद को मिटाने का प्रयास किया था, जो कि समय का एक यथार्थ था। केशव दास की 'रामचन्द्रिका' पर इसी तरह शृंगार-कालिक परिस्थितियों का पूरा प्रभाव है, तभी राम और सीता साधारण नायक-नायिका हैं।

मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' में समय का यथार्थ और भी निखर कर सामने आया है। नारी-उद्धार के इस युग में प्रताड़ित नारी की समस्या को 'साकेत' में संकलित करने का पूरा प्रयास हुआ है। इसीलिए प्रोषित-पतिका उर्मिला ही इस महाकाव्य की नायिका है और लक्ष्मण नायक है। सीता समाज सुधार में लगी है क्योंकि बनवास के समय वह भील और किन्नर जातियों की महिलाओं को उनके कल्याण के लिए चरखा और सूत कातने की शिक्षा देती है।

प्राचीन काल से ही राम कथा के कुछ प्रसंग अभिन्न रहे हैं, जैसे निषाध-राज और केवट की भक्ति उस युग की आवश्यकता थी जब आर्यों और अनार्यों का एक दूसरे का विश्वास पात्र बनना व्यापक रूप से देश के हित में था। अनार्य आदिवासियों (वानरों) की सेनाओं का समन्वय करके यह बताने का प्रयास किया गया है कि सत्य और असत्य का रूप यथार्थ में विश्व विदित है और सत्य का पक्ष लेने के लिए जाति और पांति का कोई बंधन नहीं होता है। अहल्या का उद्धार एक प्रतीकात्मक प्रसंग है। इन्द्र-भोग के बाद अहल्या को (प्रतीकात्मक) पत्थर बनाकर गौतम ऋषि ने अपने गोत्र की वंश-परम्परा को अवरुद्ध किया था। प्रतीकात्मक रूप से ही राम ने अहल्या का उद्धार करके इस गोत्र की परम्परा को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान किया था। यह राम का न्याय था जिसमें यथार्थ को स्वीकार किया गया। इसी तरह वसिष्ठ मुनि भी राम को समय का यथार्थ समझाते हुए कहते हैं—

'धनमार्ज्य काकुतस्थ, धनमूलमेदम् जगत्।
अन्तरं नाभिजानामि निर्धनस्य मृतस्य च॥'

[हे काकुतस्थ (राम)! धन का अर्जन करो क्योंकि धन ही जगत् का मूल है। निर्धन और मृतक में क्या अन्तर है, यह मैं भी नहीं जानता हूं।]

आदर्शों को निभाते-निभाते राम कथा के पात्रों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, इस बात का अनुमान राम-रावण युद्ध के विशाल प्रसंग से लगाया जा सकता है। आदर्श और यथार्थ का आपसी संघर्ष युगों से चला आ रहा है चाहे वह राम का युग हो या आधुनिक युग हो। समय के यथार्थ की मांग के अनुरूप क्षेत्रीय भाषाओं की राम कथाओं में कई प्रकार के संशोधन हुए हैं। राम कथा के माध्यम् से भारतीय समाज के आदर्श और यथार्थ एक दूसरे के साथ आंख मिचौनी खेलते आ रहे हैं। जब राम कथा के विभिन्न पहलुओं की आलोचना निष्पक्ष और यथार्थ दृष्टि से की जाती है तो पता चलता है कि समय के साथ-साथ राम कथाकारों ने यथार्थ को आदर्शों के आवरण में ढांकने और आंकने के प्रयास किए हैं। ●

—अग्निशेखर

शंकराचार्य पर्वत

पूछा चूल्हे के सामने बैठी
आलू छील रही मेरी मां ने
कि तुम कितने साल के हो ?
जितने साल के हो तुम
उतने ही बरस पहले उस बड़े भूँचाल के बरस
चढ़ी थी मैं शंकराचार्य मंदिर -
तुम्हारे पिता के साथ ।
याद है मुझे वह रास्ते की बड़ी सी चट्टान
तुम्हारे पिता ने कहा था -
सुस्ता लो कुछ ।
कहा मां ने चौके की खिड़की से बाहर देखकर
कभी चढ़ूँगी अब
प्रारब्ध में होगा तो,
वैसे तुम चढ़ते ही रहते हो हर इतवार को
दूर भी कितना है..
क्या वैसी ही है अभी भी वो चट्टान बड़ी-सी?
सुना है
आज रास्ता उतना कठिन नहीं
सीढ़ी सीढ़ी भी चढ़ा जा सकता है,
क्या मंदिर अपनी ही जगह हैं वहां..
काफी बड़ा हुआ होगा
प्रांगण का वो चिनार ।
मां छील कर आलू
निचुड़े हुए फेफड़ों में कहीं बची हुई
गिनती की सांसें
फूंकती है मेरे जन्म से
धुंआते चूल्हे में
मां ने कितने आलू छीले होंगे
इसी चौके के धुएं में
धुएं में कैसे दिखता उसे शंकराचार्य मंदिर !
रसोई की खिड़की से भी नहीं..
क्या कभी
मैं चढ़ा रहा हूंगा उसको हाथ थामे
शंकराचार्य पर्वत से दिखाते हुए श्रीनगर ?
कहूंगा, कितनी बुलंदी पर है !

(कवि के काव्य ग्रंथ 'किसी भी समय' से)

—अपर्णा चतुर्वेदी 'प्रीता'

अब कैसी हो तुम, डल झील !

आज पूरा चांद कार्तिक का, हल्की ठिठुरन ले फिर उगा है -
आकाश में,
याद आ गयीं तुम मुझे डल झील !
दो बरस पहले हम दोनों साथ थे शिकारे में बैठे,
तुम एक शांत उदास युवती की तरह
बार बार मुझसे कुछ कहना चाह रही थी
लेकिन न जाने क्यों क्या सोचकर खुल न सकी
मेरे सामने एक प्रतिबिंब । पूर्णिमा का चांद था
जब शिकारे में उतरने लगा
तब अचानक ही रुख मोड़ लिया था तुमने शिकारे का
हर इंसान बेरुखी से, भटकन से जुड़ा नहीं होता
बंधी हुई दीवारों का अक्स नहीं होता
चार चिनार के दश्त सा जुनून होता है
शरद पूर्णिमा की उजली छुअन से
कांप गई थी जब तुम तो हृदय ने
भविष्य की धूप से खिला दी थी केसर क्यारी भरपूर
हल्के हल्के बैंगनी फूलों से
तभी एक लड़की ने बढ़ा दी थी फूलों भरी डलिया
और आंखों में भर दी थी एक याचना निश्शब्द ।
तब भी तुम शांत थी जब उसी बालिका ने
हौले से चप्पू चलाकर कहा था "खुदा हाफिज"
और बांट गई थी इतना प्यार..
एक बार मैं फिर लौटूंगी तुम्हारे पास
शंकराचार्य की सीढ़ियां चढ़ने से पहले
तब तक अपना हाल भेजती रहना
अब कैसी हो तुम, डल झील
अब तुम कैसी हो ?

('शीराज़ा' से साभार)

(दो भागों में समाप्य)

—मोतीलाल पुष्कर

राम भक्ति और दर्शन—I

(श्री राम की भक्ति का क्या स्वरूप है और रामभक्ति का दार्शनिक अर्थ क्या है, इस विषय पर कश्मीर के समर्थ कवि विद्वान और व्याख्याता मोती लाल पुष्कर ने एक लम्बा लेख प्रस्तुत किया है जिसे हम पाठकों के लिए दो किस्तों में पेश कर रहे हैं। श्री पुष्कर लंबे अध्यापन काल के बाद आजकल अवकाश प्राप्त जीवन में भी सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं।)

परम आराध्य सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, निर्विकार, अजन्मा अनादि प्रभु की लंबी नामावली में श्री राम का परम पावन नाम भक्त हृदयों को सदा आनंदित करता रहा है। इन्ही निराकार प्रभु ने अपनी इच्छा से इश्वाकु वंश में त्रेता युग में जन्म लिया था। इन्हीं रघुकुल भूषण की महिमा ऋषियों मुनियों एवं देवगण ने अपने अपने ढंग से गाकर असीम को सीमाओं में बांधकर मर्यादा पुरुषोत्तम की अद्भुत कृपा के सहारे सब को भव सागर पार कराने और इहलौकिक जीवन को सुखदायी बनाने के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। तथ: पूत परमश्रद्धेय महापुरुषों ने अपने अंतस्थल में विराजमान प्रभु-परायण अनन्य भावना को विभिन्न काव्य ग्रंथों में मानवेंद्र प्रभु जी के विषय में ललित केलि एवं काव्य कौशल में पिरोया है।

श्री राम पर रची गई कृतियों का मूल आधार वाल्मीकि महाऋषि की संस्कृत में लिखी रामायण है। वाल्मीकि डाकू थे। लूटते थे। सारी भारतीय ज्ञान संपदा के स्रोत सात ऋषि बन में से गुजर रहे थे कि रत्नाकर (काया कल्प के बाद महर्षि वाल्मीकि) का काम बन पड़ा। वह हाज़िर होकर सचेत करने लगा कि "सारी संपदा छोड़ दो और भाग जाओ।" सप्त ऋषियों ने एक साधारण सा प्रश्न पूछा कि क्या तुम्हारा परिवार लूट के इस पाप में भागीदार है? रत्नाकर ने सुनकर इतना समझ लिया कि पथिक भागने का बहाना कर रहे हैं। उसने यही बात दोहराई तो ऋषिवरों ने उसको आश्वासन देने के लिए कह दिया कि हम भागने का बहाना नहीं ढूंढ़ रहे। तुम चाहो तो हमें इसी वन में वृक्षों से बांध दो। उसने वैसा ही किया और अपने परिवार जनों से पूछने घर पहुंचा। उन्होंने वापस समझाते हुए कहा, "परिवार का भरण-पोषण करना आप का काम है। हम पाप के भागी क्यों बनें।" यह सुनकर रत्नाकर ने अत्यन्त ग्लानिग्रस्त होकर ऋषिगणों के पास जाकर उन्हें बन्धन मुक्त कर हित प्रदान करने की प्रार्थना की। उन महानुभावों ने उस पर तरस खाकर उसे 'मरा' 'मरा' जपने का उपदेश दिया। यही नामोपदेश, यही रामोपदेश भक्ति कहलाता है। वह इसे

रटने लगा और अनन्तकाल तक इसी नामरूप में रमा रहा। उसके शरीर पर मिट्टी जमी, चींटियों ने वहां आवास बनाये। भक्ति के लिए तन्मयता, अनन्यमनस्कता एवं एकनिष्ठा की यही आवश्यकता है।

कालान्तर में सत्मंत्रोपदेष्टा ऋषि प्रवीण उसी कान्तार से गुज़रे और वाल्मीकि को 'जय श्री राम' के नादों से जगाया। अब वाल्मीकि नाम पड़ा रत्नाकर डाकू का। यह उसका धरती माता के गर्भ से नया जन्म हुआ था। नया नामकरण हुआ था। यही काया कल्प कहलाता है। अब उसकी चेतना श्रीराम निष्ठ हो गई थी। उसकी भावना, सम्वेदना अन्तः-करण बाह्यकारण समेत समग्ररूप आत्मतत्व के स्वरूप को पहचानने लगा था। इसी शुद्ध चैतना ने क्रान्ति-दर्शी कवि को जन्म दिया था। एक दिन प्रातः काल महर्षि जी वन में थे। अचानक तीर से विद्ध एक क्रौंच-पक्षी नीड़ से नीचे धरती पर गिरकर छट-पटाने लगा। वह अपनी प्रिय क्रौंची से अलग हुआ था। उसका कामासक्त जीवन धूल का ढेर बना था तो महर्षि जी के पावन अन्तःकरण से स्वतः काव्यधारा प्रवाहित हुई—

"मा निषाध प्रतिष्ठां त्वं अगमः शाश्वती समाः।
यत्क्रौंच मिथुनादेकं अवधीः काम मोहितम् ॥"

क्रौंच की छटपाहट ने महाकाव्य की सृष्टि की। रावण ने भी तो वनवास का सुख भोग रहे प्रभु के जीवन में सीता विरह के कारण यही क्रौंच स्थिति

वाल्मीकि नाम पड़ा रत्नाकर डाकू का। यह उसका धरती माता के गर्भ से नया जन्म हुआ था, नया नामकरण हुआ था। यही कायाकल्प कहलाता है। अब उसकी चेतना रामनिष्ट हो गई थी।

पैदा की थी। यह एकातम भावना अथवा सर्वत्र एक ही तत्त्व की प्रधानता की अनुभूति करना ही राम-भक्ति की फलश्रुति है। भगवान ने श्री गीता में कहा है कि "जो मुझे हर में देखता है और हर को मुझ में देखता है, वह मुझ से दूर नहीं, मैं उससे दूर नहीं।" यह विरह कथा ही राम कथा, श्री रामगाथा, प्रभु सत्ता को जन्म देती है। इसकी असीमित परिधि में चराचर समाया हुआ है। इसी बात को साधु टी० सी० वासवानी ने इस प्रकार कहा है, "Take into your fold the beast and the bird" पंत जी ने इसी भाव को इस मनोहर छन्द में आबद्ध किया है, 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।' यह महर्षि जी की तपः पूत स्वतः स्फूर्त वाणी श्री राम के जन्म में स्वयं मूर्त रूप हुई। इसी मूर्त रूप को श्री राम प्रभु का अवतरण कहा गया है। प्रभु अद्वैतवाद के जीवन्त स्वरूप थे। उसी तत्त्व को लक्ष्य करके 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता-भवभूति ने इस प्रकार कहा है कि "एक मात्र करुण रस ही कारणवश या निमित्तभेद से भिन्न-भिन्न छायायें धारण कर विश्व की समस्त सम्वेदनाओं का स्वरूप ग्रहण करता है—जैसे एक ही जल आवर्त्त, बुदबुद एवं तरंगों का आकार धारण कर भिन्न-भिन्न नामों से याद किया जाता है।"

ऐसे करुणानिधान प्रभु ने अयोध्याधिपति कोशल नरेश महाराजा दशरथ के घर में जन्म लिया। वें सम्पूर्ण कलाओं से युक्त अद्वितीय अवतारी पुरुष थे जिनको लक्ष्य कर आदि कवि ने गाया है, "रामो नाम

गुणाकर:" यानी श्री राम प्रभु गुणों की खान हैं। ये गुण क्या हैं? यह स्वामी विवेकानन्द का Practical Vedanta ही है। परम प्रभु ने शबरी के झूठे बेर खाकर समरसता की गंगा को सदा के लिए बहाया। हनुमान जी सुग्रीव आदि आदिवासी बन्धुओं को गले लगाकर बन्धुत्व की सृष्टि की। एक ही ब्रह्म इस जीव और जगत् के रूप में विराजमान है, इस लक्ष्य को प्रभु ने प्रत्यक्ष रूप प्रदान किया। इन्हीं गिरिवासी, वनवासी, सागरवासी जनों को संगठित कर संसार को अत्याचारी, क्रूर, अभिमानी रावण से मुक्ति दिलाई। सारे विश्व में समस्त दिशाओं में श्री राम की महिमा आज भी गाई जाती है। दक्षिण पूर्व एशिया के देश श्री राम की जीवन लीला को, रामायण कथा को आज के दिन यानी विजयादशमी के शुभ अवसर पर गाकर, खेलकर अपनी परंपरागत राम परंपरा का प्रमाण सारे विश्व के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इतिहासकार जबरल टॉड ने लिखा है कि यदि मुझे पृथ्वी के ओर-छोर में कोई कहीं पर भी श्री राम के चरण चिह्नों की विद्यमानता का प्रमाण देगा तो मुझे विस्मय नहीं होगा क्योंकि इसी महापुरुष की छाप पश्चिम एशिया और उससे भी आगे सारी पृथ्वी को कृपा से आप्लावित कर चुकी है। 'रोम', 'राम्जे', 'रोमानिया' आदि शब्द इसी से बने हैं।

इसी महिमा मंडित ब्रह्म के विषय में विश्व की अनेकानेक भाषाओं में भक्ति पूर्ण काव्यों की सृष्टि हुई है। भारतवर्ष की कोई विरली ही भाषा होगी जिसमें राम-गाथा विद्यमान न हो। संस्कृत भाषा के कवि कुल गुरु कालिदास ने इसी पुनीत गाथा को 'रघुवंशम्' नामक काव्य में गाया है। वह कहते हैं "कहां अरुणादित्य के वंश में उद्भूत भगवान श्री राम की अद्वितीय गाथा और कहां मैं मन्दबुद्धि। यह मेरा प्रयास अनन्त सागर को लट्ठे के सहारे पार करने के समान ही है।" इसी गाथा को भवभूति ने 'उत्तररामचरितम्' है अपनी सम्वेदनाओं को साकार कर अभिव्यक्ति दी है। एक हज़ार वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में कंबन ने, आलवार संतों ने तथा अनेकानेक दार्शनिक विभूतियों ने परब्रह्म की दार्शनिक व्याख्या को इस परमपुरुष के जीवन को समक्ष रख के प्रकट किया है।

हिन्दी साहित्य को गोस्वामी तुलसीदास की अद्भुत रचना मानस काव्य ने मानो जीवन के रस से प्लावित किया है। तुलसी ने वास्तव में रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत के सिद्धांतों को अपने काव्य के द्वारा प्रतिपादित किया है। इस मत के अनुसार जीव और जगत ब्रह्म के ही चेतन और अचेतन अंश हैं। आप दसवीं शताब्दी में आचार्य केशवभट्ट के घर जन्मे थे। तुलसी ने बड़े मधुर, गम्भीर एवं सरल ढंग से दार्शनिक तत्त्व की स्थापना की। वैरागी संत होने के कारण वैराग्य की राममयी छाया यद्यपि इस काव्यग्रन्थ में विद्यमान है किन्तु प्रभु की महिमामयी गाथा की ओर उन्होंने दुर्लक्ष्य नहीं किया है। इसी ब्रह्म के लौकिक जीवन को गाकर अपने समय में आपद्ग्रस्त, त्रस्त भारतीय प्रजा का ढाढस बंधाया।

—(शेष भाग अगले अंक में)

तुलसीदास ने रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत को अपने काव्य के द्वारा प्रतिपादित किया। इस मत के अनुसार जीव और जगत ब्रह्म के ही चेतन और अचेतन अंश हैं।

—पृथ्वीनाथ मधुप

कश्मीरी साहित्य की अमूल्यनिधि : शर्मा रामायण

कश्मीरी के रामकथा-काव्य में ही नहीं अपितु समग्र कश्मीरी वाङ्‌मय में 'शर्मारामायण' का अपना एक विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस रचना के विभिन्न प्रसंगों की प्रबन्धात्मकता तथा इन प्रसंगों की मुख्य कथा से संबद्धता इस तरह से नियोजित है कि कहीं तनिक भी बाधा नहीं आने पाई है। इस कृति में वस्तुगत शिथिलता कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती। पूर्ण और समृद्ध चरित्र-चित्रण, पात्रानुकूल सुन्दर संवाद नियोजन, विविध रसों की नियोजना, चमत्कारपूर्ण अलंकार योजना तथा महाकाव्योचित भाषा-शैली आदि इस महाकाव्य की कुछ विशेषताएं है।

इस महाकाव्य की रचना पण्डित नीलकण्ठ शर्मा ने की है। श्री शर्मा जी का जन्म 21 जून सन् 1888 ई० (निर्जला एकादशी) तथा निर्वाण 22 जनवरी सन् 1971 ई० (माघ कृष्ण एकादशी) को हुआ। आप बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के स्वामी थे। आपकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई और आपने आगे चल कर अपनी मेहनत और लगन से ही संस्कृत, फ़ारसी, हिन्दी तथा उर्दू आदि भाषाओं का अच्छा-खासा ज्ञान अर्जित किया। अपनी प्रतिभा तथा स्वश्रम से ही आप ज्योतिष शास्त्र में भी पारंगत हुए। आप अपने पूर्वजों द्वारा छोड़ी गई भूमि की उपज से अपना जीवन यापन बहुत ही अच्छी तरह से करते रहे। कविता, अध्यात्म, साधुसंगति तथा ज्योतिष आपकी रुचियां रही। कश्मीरी के अतिरिक्त आपने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा फ़ारसी में भी छिट-पुट कविताएँ रचीं। अपनी बहुचर्चित कृति 'शर्मारामा-यण' में भी आपने बहुभाषाविज्ञ होने का परिचय दिया है। हालांकि आपके द्वारा रचे गये साहित्य का अधिकांश भाग अप्रकाशित है (क्योंकि आप हमेशा विज्ञापन एवं अहं को उकसाने वाले साधनों से कोसों दूर रहे।) पर आपके हज़ारों पाठक एवं चाहने वाले दूर-दूर से आपके यहां आपकी कविता का आस्वादन करने के लिए आते रहे।

आपके कई समीक्षकों ने आपके विषय में यह भ्रांति फैलाई है कि आपने किसी गुरु से दीक्षा ली थी पर वास्तविकता यह है कि आप परम प्रकाश को ही अपना गुरु मानते रहे हैं। संभवतः आपकी निम्न पंक्तियां आपकी गुरु संबन्धी भ्रांति का कारण रही हों :—

अग्यानु' गटे सिरियि प्रेकाश छुख आसु'वोनुय
ही श्री सथरवरु' रुयनु'-ख्यनु' छुम आसरु' चोनुय..

बवु'सरु'तरु'नुक नीलकंठस ति बनतु'वोपाय
नन्दु'लाल जी तय बाल जी तसति रूजिन सहाय
छु टंगु'आमुत मनज़ल ह्यथ सुछु मंगु'बोनुय। ..

श्री शर्मा जी चूंकि साधु-सन्तों के प्रति असीम आदर एवं श्रद्धा भाव रखते थे इसी कारण उक्त पंक्तियों में नन्द लाल जी तथा बाल जी, जो श्री शर्मा जी के समकालीन एवं पहुंचे हुए सन्त थे तथा जिन से इनका संवाद था, का नामोल्लेख हुआ है और किसी कारण से नहीं। मैंने श्री शर्मा जी के श्रीमुख से सुना है कि बचपन में उनकी भेंट पण्डित कृष्णजुव राज़दान से हुई थी।

'शर्मारामायण' की रचना का शुभारम्भ सन् 1919 ई० की रामनवमी* को हुआ तथा इसकी समाप्ति सन् 1926 ई० को हुई। महाकाव्यों की परम्परा के अनुसार ही इस महाकाव्य का श्री गणेश भी मंगलाचरण से हुआ है। यद्यपि इस कृति की रचना करने से पूर्व कवि ने अध्यात्म रामायण, वालमीकी रामायण, पद्मपुराण तथा रामचरितमानस आदि अनेक ग्रंथों का विशद अध्ययन किया था पर लगता है कि कवि पर अध्यात्म रामायण तथा रामचरितमानस का काफी प्रभाव रहा। इसका आशय यह कदापि नहीं कि शर्मारामायण में मौलिकता तथा नवीन उद्भावनाओं का अभाव है। समीक्ष्य ग्रंथ में नवीन उद्भावनाओं को सहज ही गंगावतरण, बालि-सुग्रीव जन्म, त्रिजटा-स्वपन, रामेश्वर महादेव की स्थापना, रावण द्वारा श्री रामचन्द्र जी से वरदान मांगना, महीरावण जन्म एवं जीवन प्रसंग तथा नरान्तकदादिबल युद्ध आदि प्रसंगों में देखा जा सकता है।

विभिन्न पात्रों के चरित्र का चित्रण उनके गुणों अवगुणों को दृष्टिगत रखते हुए कुशलता के साथ किया गया है। जहां श्री रामचन्द्र को निर्गुण-सगुण ब्रह्म तथा विष्णु और शिव से भी ऊंचे रूप में चित्रित किया गया है वहीं उन्हें पिता का मृत्यु-समाचार पाने पर साधारण मानव की तरह फूट-फूट कर रोते तथा सीताहरण के पश्चात् प्रकृति के कण-कण से सीता का पता पूछते भी चित्रित किया गया है। भरत का चित्रण अनन्य रामभक्त के रूप में किया गया है। जनक भरत के सबन्ध में कहते हैं कि :-

'छि भरसु'न्य कथा बव-बन्दन चटान
तसुन्द नाव ह्यनय सू'त्य सा'र्य पाफ हटान।

लक्ष्मण को भ्रातृभक्त, हनुमान को निःस्वार्थ रामभक्त तथा रावण और मन्दोदरी को राम-भक्त के रूप में भी चित्रित किया है। कुल मिलाकर समस्त पात्रों का चरित्र-चित्रण पूर्ण और समृद्ध है।

कलात्मकता एवं संवाद सौष्ठव की दृष्टि से कैकेयी-मथरा संवाद, कैकेयी-दशरथ संवाद तथा अंगद रावण संवाद बहुत ही सुन्दर बन पड़े हैं। लक्ष्मण-परशुराम संवाद तथा अंगद-रावण संवाद में व्यंग्य और वाग्विदग्धता पराकाष्टा तक पहुंची है। कैकेयी-मंथरा संवाद में नारी स्वभाव का सहज एवं नैसर्गिक रूप से उद्घाटन हुआ है। कैकेयी-दशरथ संवाद में दशरथ की अन्तर्वेदना सुन्दर तथा संयत शब्दावली में स्वाभाविक रूप से प्रकट हुई है। ये संवाद पात्रों के अन्तर की छवि प्रस्तुत करने में समर्थ होने के कारण उनके चरित्र-विकास एवं मनोविश्लेषण में बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

'शर्मारामायण' में महाकाव्यों की परम्परानुसार ही विभिन्न रसों का समायोजन हुआ है। पुष्पवाटिका तथा सीताहरण प्रसंगों में श्री रामचन्द्र जी का समस्त द्रुम लताओं से सीता का पता पूछना आदि में श्रृंगार रस; श्रीरामवनगमन, दशरथ मरण तथा मन्दोदरी

* ओ'नुम यखकलम मील कागज़ क़लम अमि द्वह व्वतम आ'स रामा नवम।

विलाप आदि में करुण रस; शिव के दुल्हा रूप और ससुराल में हास-परिहास तथा नारद मोह भंग में हास्य रस; राम-खरदूषण युद्ध तथा लव-कुश युद्ध प्रसंगों में वीर रस; कुम्भकरण-महाकाल युद्ध वर्णन में अद्भुत रस; कुम्भकरण जागरण तथा लक्ष्मण-मेघनाथ युद्ध प्रसंग आदि में भयानक रस, विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण याचना तथा रामवनगमन के पश्चात् दशरथ के प्रलापों में वात्सल्य रस और अरुन्धती-कैकेयी संवाद, बाल्मीकि-भारद्वाज आश्रमों की ज्ञान-चर्चा, शरभंग-सुतीक्ष्ण-भेंट एवं श्रीरामचन्द्र द्वारा लक्ष्मण को ज्ञानोपदेश में शान्त रस का परिपाक हुआ है।

अलंकारों में प्रमुखतः उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक तथा रूपक आदि का प्रयोग हुआ है*। सीता-विरह वर्णन में कवि ने बिन्दी विहीन शब्दों का प्रयोग किया है** क्योंकि—

विरहनार च्यशमन हो'खुस आब आह ।
सपुन त्वखतु' हरफ़न ति नायाब आह ।

'शर्मारामायण' का युद्ध चित्रण बहुत ही सजीव एवं कलात्मक बन पड़ा है। इस कथन को प्रमाणित करने के लिए निम्न पंक्तियां पर्याप्त होंगी। पंक्तियों के शब्दानुप्रास तथा ध्वनि बिम्बों पर भी ध्यान दीजिये :—

असर आ'स्य ग्वो'रजव सुतिन जंग करान
गरान जन अहन आ'स्य आहंगरान ।
यिवान ग्वो'रजसुंय ग्वो'रज़ू तेग़ु'य ब तेग
शजर बर शजर कोह ब कोह वेदरेग
गछान यी सदाह ओस कर च़ु'य व्यशास
ठको ठक छन्यो छवन्य तु' टासो प्वटास ।

इस कृति में जिस शैली का प्रयोग किया गया है वह है इतिवृत्तात्मक तथा गीतिशैली का समन्वय। गीतिशैली का प्रयोग वन्दनाओं एवं स्तुतियों में ही किया गया है। इस कृति की भाषा पर फ़ारसी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है पर साथ ही संस्कृत तथा हिन्दी-उर्दू के मिश्रण का भी जगह-जगह निःसंकोच प्रयोग किया गया है। ☐

* (क) च़ये'रो'स स्वर्ग छुम म्ये नरु'कस समान। (ख) च़ म'रो'स गाड छुस मो बेआब आह ।
(ग) नतय हीथरेजन प्ये'यम हाय-हाय। (घ) सु बुलबुल स्व गुलरो छारान ओस ।

** कवि ने अपनी कृति को फ़ारसी लिपि में लिपिबद्ध किया है।

चिट्ठी-पत्री-शेष....

'कश्यप समाचार' को नए गेट-अप के साथ निकालने पर बधाई। अंदर अभी और तब्दीलियां लाने से आपका यह मैग्ज़ीन पूरी तरह ऊंचे स्तर का बन सकता है।

—मोतीलाल कौल
मु० प्रताप गढ़; जम्मू।

'कश्यप समाचार' में छपे लेख आदि पर पाठकों की हर तरह की प्रतिक्रिया का स्वागत है। अपने पत्र साफ़ अक्षरों में लिखें। पांच तारीख से पहले आए पत्र ही उस मास के अंक में प्रकाशित किए जा सकेंगे।

—संपादक

चिट्ठी - पत्री

'कश्यप समाचार' का "जन्माष्टमी विशेषांक" कुछ देर से मिला। मगर 'देर ग्रायद दुरुस्त ग्रायद'। पत्रिका का रूप बदल गया है, यह देखकर प्रसन्नता हुई, ग्रब इसके ग्रगले अंकों का इंतजार रहेगा। ग्राशा है उनमें नया पन बना रहेगा।

—ग्रशोक वामजई
तिलो तालाब, जम्मू।



'जन्माष्टमी अंक' बहुत सुन्दर निकला है। 'पंडित कृष्ण जू राजदान के कृष्ण' लेख बहुत पांडित्य पूर्ण है। 'भगवद् गीता में ज्ञानयोग' मुझे ज्यादा ग्रच्छा लगा। गीता के बारे में ग्रौर भी इसी तरह के लेखों की जरूरत है, जिस से हमारे नौजवान लड़के ग्रौर लड़कियां ग्रपनी महान परंपरा के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

—विजय मोहिनी ऐमा
शास्त्री नगर, जम्मू।



प्रभु ग्रापको इस (संपादन के) सत्कार्य में सफल बनाए, इस ग्राशीर्वाद के साथ—

—मोतीलाल 'पुष्कर'
गीता भवन, परेड, जम्मू।

'कश्यप समाचार' को एक नए रूपरंग में देखकर विश्वास बढ़ा है कि यदि हम चाहें, यदि हम एक साथ मिलकर ग्रापसी हित के बारे में सोचें या कोई कदम उठाएं तो सफलता हमारे पैर चूमेगी।

—कृष्ण कुमार भट्ट
जानीपुर कालोनी, जम्मू।

जम्मू के एक दुकानदार (जानीपोर) के पास 'कश्यप समाचार' देखकर मैं चौंक गया। फिर लेकर पढ़ा तो पता चला कि यह पत्रिका कई सालों से निकल रही थी, पर हमें इसके बारे में मालूम भी नहीं था। ग्रापको मुबारक है। इस अंक को देखकर ग्राशा कर सकते हैं कि ग्रागे भी चलाते रहेंगे।

—राधाकृष्ण तिकू
ग्रखनूर।



'कश्यप समाचार' का जन्माष्टमी अंक मिला। संपादक ग्रौर सभा (कश्मीरी पंडित सभा) दोनों बधाई के पात्र हैं। हिंदी भाग को ग्रौर बढ़ा कर ग्रौर इसमें हमारी ग्राज की समस्याग्रों को स्थान देकर ग्राप 'कश्यप समाचार' को हमारी सच्ची ग्रावाज बना सकते हैं। प्रूफ़ की ग़लतियों पर खास ध्यान देना चाहिए।

—सरोजिनी हंडू
जुलाका मुहल्ला, जम्मू।



'संपादकीय' में ग्रापने कश्मीरी पंडित सभा के चुनाव के बारे में केवल इतना कहा है कि इस चुनाव से सरकार को संकेत मिलना चाहिए कि कश्मीरी पंडितों के बगैर कश्मीर में हालात फिर पहले जैसे नहीं हो सकते। इस विषय पर यदि ग्रौर भी कोई लेख ग्रादि शामिल करें तो हम लोग बात पूरी तरह समझ सकते हैं कि हमें कितना जागरूक रहना चाहिए।

—सोमनाथ सोपोरी
नगरोटा, जम्मू।

शेष पृष्ठ 14 पर...

कश्यप समाचार (का'शुर बोग)

का'शुर लेखनुक परनुक त'रीकु'

स्यतंबर (जन्माष्टमी) किस अंकस मंज को'र असि तफसीलु' सान बहस कि अकोय अपारट्राफी हुक निशानु' (') इस्तिमाल क'रिथ किथु' क'न्य् ह्यकव अ'स्य सा'री का'शिर्य् स्वर लीखिथ। यादाश्तु' खा'तरु' छि ये'त्यन् बे'यि अकि लटि का'शिर बरनमाला पेश :—

(i) स्वर — अ, अ' (च़'र=चिड़िया), आ, आ' (दा'र=खिड़की), इ, ई, उ, उ' (बु'=मैं, बतु'=भात), ऊ,ऊ' (तू'र=सर्दी), ए,ए' (मे'=मुझे) ओ,ओ' (नो'ट=घड़ा), अं,—य् (तीत्य्=उतने)।

(ii) व्यंजन आदि — क, ख, ग, च, च़, छ, छ़, ज, ज़, ट, ठ, ड, त, थ, द, न, प, फ, ब, म, य, र, ल, व, श, स, ह, ञ।

(iii) हिंदियिक्य् अलावु' स्वर ऋ (ृ) ऐ (ै) औ (ौ) विसर्ग (:) तु' अलावु' व्यंजन घ, भ, ढ, ध, भ, ष, स, ज्ञ तु' अनुनासिक ण हुक इस्तिमाल करव अ'स्य् सिरिफ नावन (व्यक्तीवाचक संग्यायन) मंज। मसलन कृष्ण, वैतरणी, घनश्याम, झारखंड, ढाका, धनवती, लक्ष्मण, ज्ञानेश्वर, श्रीकण्ठ।

'ङ्' तु' 'ञ्' छि व्यन्य् हिंदियस मंज ति त्रावनु' आमु'त्य् ति क्याज़ि यिमव बदलु' छि सिरिफ बिंदी लगा'विथ का'म अंदान। मसलन 'कङ्घा' बदलु' छि 'कंघा' तु' 'चञ्चल' बदलु' 'चंचल' लेखान। का'शिरिस मंज ति करव अ'स्य् तमाम अनुनासिक आवाज़व खा'तरु' बिंदी हुंदुय इस्तिमाल। मसलन क'ड, बुंगरि, च़'च़ल, खांदर, अंबार।

●

संपादकी

ब्रोंठुस ये'छिनव पनु'नि गरि

1994 तु'च जन्माष्टमी ग'यि। व्यन्य् गव यि दशु'हार, पतु'देवा'ली तु' पतु' गव सोन बो'ड दोह हेरथ। व'ड्य् दो'ह छि असि रूवशु'क तु' यकरस ज़िंदुगियि मंज अ'ह तु' रंगारंगी अनान···अ'स्य छि ज़िंदु'

रोजनुक सहारु' प्रावान, तु' दो'ह् दो'ह् कडान । क'शीरि नेरनु' पतु' ये'लि ति असि कांह बो'ड दो'ह् को'र, दिल ओस न डंजि । रीथ पा'ज असि ज़रूर अमा पो'ज़ स्व बशाशथ आ'स नु' य्वसु' पनु'निस गरस मंज़ आसिहे । असि ग्युत पन । अथस मंज़ र'ट हा'बिल तु' अर्गु' फो'ल, दीवी लक्ष्मी कुन छि द्यान क'रिथ अमा पो'ज अ'दरु' अंदर छि चं'दरु'गाम वा'त्य्मु'त्य् आसान । युथुय कथा बोज़नावन वाज्यन्य् माता जी पो'तुस वनान छि ज़ि यिथु' क'न्य् तिमन मनि कामन पूरु'ग'यि तिथय क'न्य् ग'छ्यतन असि ति, अ'स्य् छि ज्यूठ व्वशाह त्राबान ज़ि हालस छिनु' तिथ आसार कें'ह् लबनु' यिवान । युथुय हे'रु'च् दो'हु' गर्युक ज्युठ कलशु' लवु' दिवान छु तु' आ'ही करान छु ज़ि ब्रोंठुस ये'छिन असि क'शीरि पनु'निस गरस मंज़ वटुक बरुन····अ'स्य छि आरु' हत्यव न्य'तु'रव तस कुन वुछान ज़ि आस्या ति ति पो'ज़ । मगर सु अथि फो'ल रटनुक वख आ'स्यतन या कलशु' डून, असि छि वुनि ति अख आश गनान तु' हंगु' तु' मंगु' वे'यिस व्वछबस कुन प्रानन दरु' लगान । ज़िंदगियि हुंज़ि लाकमि व्याख द्रसु' लगान तु' दो'ह् दो'ह् छु यिथय क'न्य नेरान ।

दो'ह् कडुन गव को'ह् कडुन । मगर असि छु परदीसस मंज़ अ'ज्युक दो'ह् कडनस सू'त्य् सू'त्य पगहुक स'बील ति सोंचुन । अज़ दो'ह् फडव अ'स्य यदवा तद्वा, अमा पो'ज़ पगहस सू'त्य् छि सान्यन शुर्यन हुंज ज़िंदगी वा'बिस्तु' । तिम म'छ्य नु' छंबन तु' छारन लगु'न्य् । अमि खा'तरु' छु असि जाती हुं'दिस सो'थरिस प्यठ कमर गंडुन । सानि जाती हुं'ग्व यिमव दा'निशवरव, व्वस्तादव, अ'दीबव, कलाकारव, व'कीलव, बापार्यव, मुला'ज़िमव, काशकारव तु' क'मिल्यव पान पनु'नि जातियि छे'पि ग्युत तु' उग्रवादियन हुं'ज़ु' गोलि खे'यि, तिमन ब्रोंठ कनि ववसु' तस्वीर आ'स क'शीरि हुं'ज़ तु' भारतु'च ? तिम वयुथ ह्यू बविश आ'स्य वुछुन यछ़ान ? स्यतंबर र्'यथ छु असि यि याद पावान तु' व्वमेद करान ज़ि अ'स्य म'शरव नु' यि बलिदान तु' व्ये'यि पतुन बविश पनुन मुस्तकबिल शेरव श'हीदन हुं'ज़ि आशि तु' आकांख्यायि मुता'बिक ।



दशु'हारकिस मोकस प्यठ क'र्य असि यथ विशेशांकस मंज़ श्री राम सुं'ज़ि ज़िंदगियि तु' तिहंद्यन आदर्शन मुतलक पनुन्यन होसलु'मंद लिखार्यन हुं'द्य कें'ह लेख शा'मिल । व्वमेद छि ज़ि यिम प'रिथ क'रिव तो' ह्य् यिमन प्यठ पनु'न्य् राय ज़ा'हिर तु' असि सूज़िव । अमि अलावु' छि असि मंज़ खबर कू'त्य् लेखन वा'ल्य् यिमन हुं'ज़ असि खबर छनु' । तिमन छु गुज़ा'रिश ज़ि पनु'न्य् तखलीक सोज़न । अगर नु' वुनि यथ नवि लिपी मंज़ अथु' दरान छुख, प्रा'नि सु'य खतस मंज़ लीखिथ सूज्यतन । अ'स्य शेरव पा'रव सु पानय तु' सारिनु'य तान्य् वातु'नावव ।



अकी सिलसिलु'क्य त्रे' लेख

डॉ० द्वारकानाथ दुरानी

(अख) श्रीकृष्ण तु' श्रीराम

(डॉ० द्वारका नाथ दुरानी छि हिंदू संस्कृति, शास्तु'र तु' दर्मु'क्य् व्यदवान। मूलु' तलु' उर्दू तु' फारसी ज़बा'न्य् हुं'द्य् ग्रा'लिम आसनु' किन्य् छि यिमन वे'यन दर्मन तु' इतिहासन प्यठ ति नज़र। फलसफु'च स'न्य् कथ से'ज़ि तु' स'हल ज़बा'न्य् मंज़ समजावु'न्य् छि यिहं'ज़ खा'सियथ। अज़कल छि एम० ए० एम० कैंप कालेजस मंज़ प्रोफेसर।)

सान्यव अवतारव मंज़ु' छु श्री राम तु' श्री कृष्ण सुंद नाव स्यठाह श्रदा बख्ती तु' एहतरामु' सान ज़े'वि प्यठ खारनु' यिवान। श्री रामस छि 'मर्यादा पुरुषोत्तम' वनान तु' श्री कृष्णस 'लीला पुरुषोत्तम'। ख्वदवय यिम द्वनवय बगवानु' सुं'द्य अवतार छि, युहुंद स्वबाव छु अख अ'किस निश स्यठाह मुख्तलिफ बासान। श्री राम छिन अ'स्य ग्वडु' प्यठ' ग्रां'थस ताण्य अ'किस गंबीर तु' संजीदु' शख्सु' सुं'दिस सूरतस मंज़ वुछान। मगर श्री कृष्णु' सुंज़ ज़िंदगी छे' गहे चंचलतायि हुं'ज़ मूरत वासान तु' गहे असु'वु'निस गिंदु'वु'निस जामानु' सुंद अफसानु' बासान। बासान छु ज़ि श्री राम आसि नु' कां'सि ति असान गिंदान वुछमुत नु' श्री कृष्ण वदान रिवान। श्री रामन होव सा'यंसु'य जन्मस अकोय रूप मगर श्री कृष्णन बदला'व्य ख्यनु' ख्यनु' रूप। ये'लि जन श्री रामन मर्यादा पालु'नु' खा'तरु' पनु'नुय पान दावस खोर तु' वं'दिशन हुंद ज़ोलानु' चो'टुन नु' श्री कृष्णन थ'व समसारु'च मायारूपी विगिन्य नचनस मंज़ मश्गूल तु' समसार नचनोवुन। श्री रामस रूद नु' पनु'न्यन लीलायन मंज़ पनु'नि ज़ातुक कांह ख़याल, मगर श्री कृष्ण रूद लीलायन मंज़ ति' पनु'नि ज़ातुक सुमरन करान। श्री रामस आव मुशिकलन दिवताहन हुं'दिस याद दिनस प्यठ पनु'नि असली सो'रूपुक ग्यान मगर श्री कृष्णस गव व्यराट सो'रूपुक तु' पनु'नि त्रिलोकीनाथ आसनुक हमेशि ध्यान तु' ए'हसास—

यच्चापि सर्वभूतानाम बीजम तदहम जन
न तदस्ति विना यत्स्यान्मयान्भूतं चराचरम ।।
यद्यद्विभूतिमतस्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ।।

श्री कृष्णस प्यव नु' वनवास गछुन या कठिन्य् तपस्या करु'न्य् या यूग सादुन, या विश्वामित्रस हिविस व्वस्तादस या अगस्त्य हिविस महरशियस निश्य गछुन तु' से'दी प्रावु'न्य्। सु ओस ज्यनु' प्यठय लीला प्वरशोतम।

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत ।।

(गीता—10)

—ही अर्ज़ुन'। सारी स्रे'श्टी हुंद छुस ब्'य वुनिया'दी कारन। समसारुक कांह चीज़ छुनु' म्यानि वगा'र ठीकिथ। जगतस मंज़ ये'ति चे जमाल व जलाल (वैबव) नज़रि गछी सु गछी म्यानी ग़ाशिच ज़ु'च मानु'न्य। ज्यादु' वननु' मंज़ु' क्याह नेरि। म्ख़्सर पा'ठ्य् बोज़ चु' यि सोरुय ब्रमांड छु म्या'निस अ'किस अंशस प्यठ द'रिथ।

अर्ज़न दीवुन शख दूर करनु' खा'तरु' बो'न श्री कृष्णन त'मिस व्यराट रूप हावनु' विजि "ही

सा'री छि मे' मा'र्यमु'त्य, चु' छुख महज अख बहानु' (निमित्त मात्र)

श्री राम सपद्यव जवान तु' त'मिस गव पनुन दीवु' शक्तियन हुंद एहसास। श्री कृष्ण ओस माजि थनु' प्यनु' प्यठय पनु'न्यन दीवु' शक्तियन हुंद एहसास थवान। वे'श्वि रूपु' दर्शन करना'विथ द्युतुन अर्ज़न-दीवस पनुनि कर्तव्युक ग्यान। हुपा'र्य ये'लि कोर वन तु' पांडवन सलाह करनावनु' खा'तरु' श्री कृष्ण कोर-वन हु'दिस सरहदस मंज़ वोत तु' पांडवन सु'त्य् सलाह करनुक प्रस्ताव को'रुन पेश, दुशासनन, करणन, दुर्योधनन बगा'रव ज़ोन ज़ि ख़्वलो विज़ हा वा'च् ज़ि कृष्ण कर होन गिरिफ्तार। यि छु कुनुय ज़ो'न। मगर व्यराट रूप दारन क'रिथ को'र बगवानन तिहंदिस मनसूबस

ग्वरन ओस ब्रोंठुय ज़ोनमुत ज़ि यि छुनु' कांह मोमूली शखु'स, ल्यहज़ा दो'पनस ज़ि मे' दिन पनुन ख़्वलि फो'टमुत ने'चुव ज़िंदु' क'रिथ, वापस अ'निथ। श्री कृष्णन क'र ग्वरस प्रंतिगन्या। संदीपन रे'श्य सुंद पो'थुर आव मरनु' पतु वापस।

अर्जुन'! चराचर वुछ चु' म्यानिस अथ श'रीरस मंज़। अमि अलावु'तियि चु' वुछुन यछख तिति वुछ।"

ख़्वन्य जन वनि कांह चराचर वुछनु' पतु' क्याह सना रूद बकाया वुछुन लायख अर्ज़ुनु' सु'दि खा'तरु'? अमा बगवान क्याह छु यि वनान? चर तु' अचर, ज़ड तु' चीतन, प्वरुश तु' प्रकृती अलावु, छा वे'यि ति कें'ह संसारस मंज़ ये'मि कि मुशा'हिदु' करनुक फरमान छु? कथ छि साफ, बगवान छु अर्ज़ुनस वनान ज़ि ग्वसु' कथ या युस हाल वुन्य बयनस बारसस छुनु' आमुत, यानी दूर मुस्तकबलुक हाल (बावी) या दूर माज़ीमिच (पथकाल) कांह कथ सु हे'कि स्यठाह आसा'नी सान तथ शरीरस मंज़ वुछिथ। अमी म्खु' वो'ननस बगवानन कि यिम

लुरु' पार। लवकचारस मंज़ म्य'च् ख्यवान तु' मा'ज जसदा ग्रज़ क'र्य क'र्य आ'स मुचरिथ आश्चरस गछान ये'लि सोरुय ब्रमांड तस कृष्णु' सुं'दिस आ'सस मंज लबनु' यिवान। ("ज़गथ यस ज़ाव सुय असि ज़ाव") श्री कृष्णस प्यव नु' वनवास गछुन या कठिन्य तपस्या करुन्य या यूग सादुन या विश्वामित्रस हिविस व्वस्ता-दस या अगस्त्य हिविस महरशियस निश्य् गछुन तु' से'दी प्रावु'न्य। सु ओस ज्यनु' प्यठय लीला प्वर-शोतम।

मंजु'लिस मंजु'य शकटास्वर तु' पूतना गाठ वातु'नावु'न्य क्याह सना गो'व? शुर्य खयालस मंजु'य असवरन सम्हार करुन, ये'लि ज़न पा'जामु' डूर गंडु'न्य ताम मुश्किल आसान छे'। चाटु'हाल गछनुक

मोकु' कति आव अ'मिस ? कंसन ओस अ'हंदि ज्यनु' प्यठय अ'मिस ज़ख वातु'नावनुक स्यकु' यरादु' को'रमुत । अवय म्वखु' आ'स्य दिवकी माता तु' वसु'दीव राजु' का'द खानस मंज़ कू'च्यन हुंज़ ज़िंदगी गुज़ारान । हरगाह यि आसिहे नु', कृष्ण जी कति वातिहे गूकल वयन गूर्य बालनक सू'त्य छालु' मारनि गूकल ? ग्वडु'नु'क्य् काह व'री गुज़ा'र्य श्री कृष्णन गा'व रछनस, गूर्यबालक सू'त्य खेलनस, तु' गूपियन सू'त्य रासु' लीला खेलनस मंज़ । पो'तुस ये'लि कंसस मारु' गछ़ नु'च विज़ वा'च, सु गव मथरायि । कंस गव मारु' । अग्रसेन ब्यूठ तख्तस तु' वसु'दीव तु' दीवकी ग'यि का'दु' निशि आज़ाद । अदु' तो'र लूकन फिकरि ज़ि श्री कृष्णस तु' बलरामस छ़ुनु' व्वन्य् कां'ह खसरु' । मगर ख्य'तरिय संस्कार पूरु'

करनु' खा'तरु' प्यव तिमन चुहा'ठन दो'हन उजयिनी हुं'दिस संदीपन रे'शिस निशि गछ़ु'न । चोर वीद, वीदांग, शे'ख्या, कल्प, व्याकरन, निरुक्त, ज्योते'श, छंद, गनित, मूसीकी तु' तिब, यिमन सारिनु'य हुंद मुकमल ग्यान हा'सिल क'रिथ गव सु गुर्य सवा'र्य तु' दनुशि—वे'द्या हा'सिल करनु' खा'तरु' बाहन दो'हन ग्वरस निश यि आ'स महज़ अख करामाथ—यि छु महाभारतस मंज़ लीखिथ । ग्वर दखिना दिनु'च विज़ आयि । ग्वरन ओस ब्रोंहु'य ज़ोनमुत ज़ि यि छुनु' कांह मोमूली शखु'स, ल्यहज़ा दो'पनस ज़ि मे' दिन पनुन क्वलि फो'टमुत ने'चुव ज़िंदु' क'रिथ, वापस अ'निथ । श्री कृष्णन क'र ग्वरस प्रे'तिगन्या । संदीपन रे'श्य् सुंद पो'थुर आव मरनु' पतु' वापस ।

पांच सास व'रिय आसन गा'मु'त्य । बेशुमार शा'यिरव महरशियव, आचारियव, ग्रंथकारव, फलसफियव, मजहबदारव तु' लेखकव करि बेशुमार तखलीकु पेश' मगर वुनिस ताम आयिनु' गीता जी हुं'दि टकरु'च कांह ति किताब आलमि वो'जूदस मंज़ ।

श्री वेदव्यास छि वनान ज़ि यि ओस अख गा' मोमूली कारनामु' तु' बगवानु' सुंज़ अलोकिक वे'बू अगास्वर, बकास्वर, ब्रह्मा जी, यं'दराजु' वगा' स्वरन तु' अस्वरन आ'स श्री कृष्णन ल्वकचारसु' पनु'न्य् कमाल हा'व्य्मु'त्य् ।

श्री कृष्णु' सुंदिस ज़मानस मंज़ आ'स्य् द्वि कु'स्मु'क्य नाच । अख 'तांडव' तु' दो'युम 'लास्य' मगर श्री कृष्णन द्युत यिमव निशि अलग त्रे'युम नाच तरतीब यथ ज़न श्री कृष्ण-संगीत वनान छि । अथ संगीतस मुतलक छु वननु' यिवान ज़ि यि छु स्यठु' हु'य मुश्किल । बे'यि जु' छि नारदमत संगीत तु' भरतमत संगीत ।

जंग लडनु'च वे'द्या आ'स श्री कृष्णन अ'किस अखाडस मंज़ हे'छि मु'च, मगर सासु' बादन हस्त्यन चूर-चूर' करनु'च वे'द्या कति आ'सन हा'सिल क'र-मु'च । ब'डय् पहलवान बो'ठ खारु'न्य कति ओस अ'म्य हयो'छमुल ? गूर्य् बालकन निशि किनु' गूपियन निश ? किनु' कति ?

संगीत ह्यो'छ श्री कृष्णन उज्जयिनी हुं'दिस ग्वर-क्वलस मंज़ । मगर का'लिय मंथन नाच क'म्य हे'छिनोव ? गूर्य् बालकन तु' गूर्य् बायन हुं'द्य दिल मुहिथ निन्य् क'म्य् व्वस्तादन होव अ'मिस ? सा'र्य-सु'य जगतस मूहित करन वाजे'न्य म्वरली वायिन्य क'म्य सना होव अ'मिस ? सा'र्यसु'य तवा'रीखस मंज़ छुनु' कुनि जायि व्याख म्वरलीदराह लबनु' यिवान । महारथी बनुन छु नु' आसान का'माह ।

अर्जुन दीवुन रथु' चलावुन तु' मशहूरि ज़मानोमकान अमु'चा'री भीष्म पितामह सुंदि हमलु' निशि अर्जुन दीव बचावुन छा केंह् करामा'च खवतु' कम ? खवदि भीष्म पितामहन ति र'ट दंदस तल ज्यव तमि विज़ि। अथ मंज़ कुस अभ्यास ओस श्री कृष्णन को'रमुत ?

यि दा'व्यतव सोरुय यकपासे। तो'ह्य दीतव नज़र भगवत गीता यि कुन। सिरिफ चुहा'ठन दो'ह्न हुंद सवख परुन तु' लेखुन तु' अंजाम ज़ि समसारस मंज़ छनु' अमि पायिच दो'यिम कांह् ति किताबाह् ? पांच सास व'रिथ आसन गा'मु'त्य्। बेशुमार शा'यिरव, महरशियव, आचारियव' ग्रंथकारव, फलस'फियव, मज़हब दारव तु' लेखकव करि बेशुमार तखलीकु' पेश, मगर वुनिस ताम आयि नु' गीताजी हुं'दि टकरु'च कांह् ति किताब आलमि वो'जूदस मंज़ अमि ओंठ आ'सा यिछ् किताब द्रेशिटमान गा'मुच ति छुनु' वुनिस ताम मोलूम। श्रीमद भगवदगीतायि हुं'दि टकरु'च किताब लेखु'न्य् दरकिनार, जगतगुरु शंकराचार्य सुंद नाव बूज़िथ छि बड्यन फलसफियन तु' मनतयकदानन आ'रख फटान, मगर त'म्य शंकरन ये'मि विज़ि पनुन अद्वैत वाद पेश को'र, कलु' नो'मरोवुन गीतायि कुन तु' ल्यूखुन बाश ('शंकर भाष्य') यानी गीतायि हुंद तफसीर, युस ज़न वुनिस ताम अख लासा'नी तखलीक माननु' यिवान छु। अमि पतु' लीख्य् अथ प्याठ रामानुजन, माधवाचार्यन, सायण आचार्यन पनु'नि पनु'नि आयि बाश। मा'न्यतव गीता छि अख स'दु'र सो'न तु' ब'सीह··। ये'म्य यूत सो'न ग्वतु' लगोव, त्यूत म्वलुत म्वख्तु' आस अथि। यि छि स्वर्गु'च्य् "कामु'दीन", ये'म्य ज़न सारिनु'य सीवकन संतूश द्युत दिलन। यि छि सु कल्पु' व्रे'ख्य (स्वर्गुंक कुल) ज़ि युस ये'मि शोकु' बावनायि तु' आ'रिज़ोय ह्यथ अ'मिस तल ब्यूठ, त'मिस द्राव त्युथुय फल।

(जा'री····)

'वथ' बाकय हिसु'···

नु'द'बब, ललद्यद तु' शाह् हमदा'न्य् ये'ति आ'स्य हमकलाम
बम तु' बन्दूकव छु त'थ्य् बुतरा'च् को'रमुत ज्यो'न हराम !!!

●

को'त सना नियि वथ व्यनाशु'च को'त सना ?
अकु'ल का'चा रावि, आदम रावि मा !
रख्तबीज़स ताम गालनवोल ज़ाव—
गालि यथ युस वाव तथ लो'ग आव-आव
नाव्वमेदन वां'स छो'ट आश छे' जीठ
व'निज़ि क्याह तस ये'म्य् नु' दयिगथ पानु'डीठ।
राथ आ'खु'र लोसि सुबहुक फेरि गाश
नेरि नो'न स्यज़रुक तु' पज़रुक व्ये'यि प्रकाश,
सपदि व्ये'यि हमवार स्वय सा'न्य् टा'ठ वथ।
यथ करान आमु'त्य् छि अ'स्य् अन्दु'वद गथ॥

●

—सोमप्रकाश बाली

सीता हरन तु' दशु'हार

कश्यपस क'शीर सीता रा'वु'म ।
मन-प्रानु'च भे' गीता रा'वु'म ।।
पंकज-पाद फ'लिथ मे' यच् गयि
मुनिफ'ल्य मुदयाह् शिलावत् गयि
ब्रह्माण्ड चकर्योम गारान मकरन्दय
सीतायि छारान अन्दय अन्दय
संवित स्व खु'च कल मे' रा'व'म ।। कश्यपस····

त्वहिमा वुछ्वन हा गुलजारव ।
हर्दकि वावच मुश्कि अम्बारव
वे'ल्य-वन-खंगरव, को'हव तु' बालव
र्व-नि श्रुनि वजु'वु'नि आरु तु' नालव
स'ह्'ज अनहार जात पनुन्य छाय रा'वु'म ।। कश्यपस··

ककवन कक्य्या कस्तूर बोल-बा'श
तोतन टटराय न'च्य मोरन डो'ल होश
वनु'क्यन प'खियन ओस युथ तुहुन्द बोश
ड'लिख होश तय ग'य मदहोश
यि बोलान स्वय आ'स मे' अनहद शब्द रोवुम ।।
कश्यपस····

कालु'सर ब्रह्मु'सर कृष्णु'सर गंगु'सर
आंचार व्वलुर डल नील पोशकर
तिहिन्दिय अम्बुज हिश अ'छ का'र पम्बुछ
काय नल नलिनी पा'ठय् मस हिल गुछ
रुप'च लन चु'नु'न्य पोशि रंग वुज़मल रा'वु'म ।।
कश्यपस····

व्वलु' छारोन व्वन्य् सा'रिय स'मिथ
वान्दर नल नील जामवन्त निमित
खसु'वस हनुमान प्राण ह्यथ छारोन
बव स'दु'रु' अपोर लंकायि गारोन
जटायनन यस पथ यिछ् क'र गथ
सो'दर' बठि योगिनिय हा'व स्य'ज वथ
हनुमानन आका'शी व्वठ आ'वु'म ।। कश्यपस····

अर्चना वन्दना दास्य-पूजायि सू'त्य
करोन महानवमी प्रसन प'र्य् प'र्य् गीत
शैलपुत्री ब्रह्मचारिनी दया कर
च'न्द्रघंटा कूष्माण्डा यछ बर
स्कन्दमाता कात्यायनी अबय दिम
कालु'रात्री महागौरी अपोर निम
सिद्धदात्री स्य'ज़ वथ हावुम ।। कश्यपस····

विजय दशमी आयि छांड छांड च'ज
गटु' लंका माया रावुन ह्यथ ग'ज
यो'होय गव दशहार यिय गव मिलचार
निश युस रोवमुत व्ये'यि बनि बालयार
निश पर्जनावुन जग प्रे'निरावुन
चित चैतन्यावुन बे'न्यर इकावुन
प्रकाशस विमर्शच्य पा'र्य् ज़ान रा'वु'म
मन-प्रानु'च मे' गीता रा'वु'म ।। कश्यपस····

—चंचला

सा'निस वनु'वनस प्यठ रामु'कथायि हुन्द असर

का'शिर्य बटु'छि ब्रह्मनन अन्दर सारिवु'य ख्वतु' ख्वतम जा'च हुन्द्य ब्रह्ममन याने सारस्वत ब्रह्मन। ब्रह्मनन हु'ज़ का'म छे' रुज़मु'च वीद-शास्त्र तु' बाकी ज्ञानु'क्यन ग्रन्थन हुन्द मुतालु' करुन तु' अथ सू'त्य्-सू'त्य् परुन तु' परु'नावुन। चूंकि सान्यव बडु'-बडु' जदव प्यठय् छि असि यि का'म क'रमु'च ले'हज़ा छु सा'निस समाजस प्यठ वीदन-शास्त्रन तु' बाकी दर्मु'-ग्रंथ बेतर्यन हुंद स्यठाह असर प्योमुत। यथ लवकुटिस लेखस मंज़ यियि नु' यिसोरुय असर, युस सा'निस समाजस प्यठ प्यव, व्यछु'नावनु। यथ लेखस मंज़ करु' बु' सिरिफ यथ प्यठ अख सरसरी नज़र त्रावु'नु'च कूशिश जि सा'निस वनु'वनस, युस लुकु'अदु'बुक अख ज़रूरी हिसु' आसुनु' सबु'बु' सानि लुकु' जिन्दु'गी हुन्द अा'नु' छु, प्यठ क्या छु रामु' कथायि असर त्रोवमुत।

अ'स्य ह्यकव मो'ट्य पा'ठ्य वनु'वुन द्वन हिसन मंज़ बा'गु'राविथ तु'तिम गय

मेखलि वनु'वुन तु' खान्दर वनु'वुन।

मेखलि दोहय छु गुरू मेखलि महाराज़स व्यद्या-रम्ब करु'नावाम। अ'मिस छु दोजि प्यठ अूच गुरु'ट म्य'च त्रावु'ना'विथ तु' ओ'ंगजि थफ क'रिथ 'ॐ' लेखु'नावान। अ'थ्य व्यद्यारम्बस मुतलख छु' वनु' वनुक अख पद—

ब्वमावो, स्वयंसो, त्यविसते प'रिज़े।
द्यानु'य स्वरिज़े श्रीरामुन।

याने ज़िन्दगी हु'न्दि अकि अहम तु' स्यठाह ज़रूरी कामिहुन्द श्रीगनीश छु श्रीरामुन द्यान करु'नु' पतय करुन। इथय पा'ठ्य छु रामु' कथायि हुन्दि बहानु' मेखलिमहाराजस वनव'नु' यिवान ज़ि चा'न्य् मा'ज्य् छे' कौशल्या मायि हुन्द रूफ, योन्यि छु'मिथ चाख चु'ब्रह्मन वरनस मंज़ ले'हजा छुम च्ये' नाकारगी हु'न्द्यन राखिसन तु' दैत्यन नाश करुन तु' च्ये' छुय पानस अन्दर त्युथुय रबु'द पा'दु' करुन युथ श्रीरामु'च'न्द्रस ओस। वुछिव मेखलि वनु'व नुक्य यिम पद—

चितु' ज़ूनु' पछि नवु'म दो'ह ज़ाखो।
कौशल्या मातायि थनु' प्योखो।
राखिसन तु' दैत्यन गालु'नि आखो।
चाखो ब्रह्मन ज़नमस मंज़।
गोरन वो'नयो कनु' त'ल्य शबदाह।
रबदाह द्रोयो रामुन ह्यू।

मेखलि—वनु'वनु'क्यन पदन मंज़ छि वारयाह पद यिहुन्द टेक छु—

रामु'ल'छ्यमन वनवा'सी गय

यिमन मंज़ छे' रामु'कथा स्यठाह छो'ट पा'ठ्य वनु'नु' आमु'च। केंह पद वुछिव—

राम तु' ल'छ्यमन बारु'न्ब आ'सी।
रामु' लछ्यमन वनवा'सी गय।
दशरथ राजु'न्य सन्तान आ'सी।

ख'सिथ तु' बीठी दंडख वन । ....
रावुन आयोव ब्रह्मु़न ला'गिथ ।
सीता माताथि दरमस दिम ।
च्ववहन व'रियन तिम वनवा'सी ....
यिथय क'न्य छि "गछ़ तय रामु'जुव वोज़िना सोन"

टेकु'क्य् पद यिमन मंज़ राजु दशरथुन तफ करुन प्वत्रु' कामेष्ठी य'गु'न्य करुन, अ'गनु' राजुन खिर ह्यथ नेरुन, त्रे'शिवु'न्य स्वनन हुंद खिर बा'गरिथ रुयो'न तु' कौशल्यायि निश श्रीरामुन, कैकेयीनिश वरतुन तु' सुमित्रायि निश लक्ष्मणुन तु' शत्रुघ्नुन थनु' प्यो'न वखुनमुत ।

खान्दर वनु'वनस मंज़ ति छु वारु'यहन जायन रामु' कथायि हुन्द असर टाकारु' पा'ठय लबनु' यिवान । .ये'मि विज़ि माहराजु' होहवुर छु वातान जना'नु छे' वनु'वनु'क्य यिम पद वनान—

रामस लक्ष्मण पो'त महाराजय
दशिरथु'नुय शाहज़ादय आव ।

लगु'नु' विज़ी छु वनु'व'नुक यि पद ति यिवान वनु'वनु'यथ मंज़ कोरिमा'लिस जनक राजस सूत्य् ल'गुनस स्वयं वरस सू'त्य् तु' माहाराज़स रामस सू'त्य् छि मुशा'बहथ करु'नु यिवान, वुछिव—

जनक राजुन सोयंवर छुय
दा'नुश रामु'जुव तुलने आव ।

महारे'न्य येलि वा'रिव छे सखु'रान तु' तमि छु मालिन्युक सख फेरान तु' व्येयि छे' अ'न्दुयं-अ'न्दरी सोचान ज़ि खबर वा'रिवि क्याह बन्यम? किथ्य् प्यनम ? यि सूच-सूच छु अ'मिस ओ'श बसान अमिसातु छे ज़नानु' अ'मिस बनु'वनु'कि ये'मि पदु' सूत्य् चेनुवु'न्य दिवान ज़ि कूरी, गम मु' बर श्रीरामु'-रामु' कर, सुय दियी च्ये सोरु'य स्वख तु' सावय—

क्याज़ि छख गमगीन रामु'-रामु' मो'ठुयय ।
करमय लोन चोन पो'ठुये त्राम ।

येमिसातु कोरि छु वा'रिव आसान नेरुन तु महाराजु' छु वीगिस प्यठ प्रारान आसान तमिसातु ति छे' ज़नानु' महाराज़स रामस सू'त्य, न्येचिव्य य'ज़मनस दशरथ राजस तु' महारे'नि सीतायि सू'त्य यिथु' क'न्य मुशा'बिहथ दिवान—

स्वनु' सु'जि गंगु'जे त्रेश चू रामो
अ'स्य न सा' त्रावोन शामस ताम ।
कनथव असिकुन दशरथ राजो ।
सा'न्य कूर सीता तु' वारु' र'छ्यज़्यन ।

वनु नुक गरु'ज़ छुज़ि सा'निस प्रथ कारस तु शहस-शहस मंज़ छे दर्मु बावना आ'समुच । यिह बावना छे व्वन्य् हनि-हनि स्वतान-स्वतान आमु च । खबर अमीकिन्य मा छि असि यिम द्रख तु' वतनब्य ला'यी वूगु'न्य प्यवान । हना पज़ि असि सोंचुन ।

अख तु' अख गव काह

स्यतंबर किस र'यतस दोरान आसिवु' प्वहि जामि जामि लबन प्यठ वुछमुत सफेदी प्यठ प्रज़ल वु'न्यन व्वज़ल्यन अछरन मंज़ लीखिथ—"अख तु' अख गव काह" "दो'पुव ना पनुन कश्मीर बनि" "जंगुन हे'छिव'—"लावा'रिस चीज़न म ला'गिव अथु'—पनुन कश्मीर" वगा'रु' वगा'रु'.. जे'मिस मंज़ यिथु' क'न्य् का'शिर्य् पा'ठ्य लबन प्यठ कां'सि हुं'दि तर्फु कें'ह ति लेखनु' युन...यि छि असि का'शिर्यन तु माजि जे'वि तरकी यछ़न वाल्यन हुं'दि खा'तरु' स्यठाह खो'शी तु फखरु'च कथ । मुबारख । प'ज़्यं पा'ठ्य् ये'लि अख तु' अख समि तु' कुनि ति मसलस प्यठ अकी अंदाजु' सोंचि, कामया'वी मेलि ज़रूर । का'शुर नागरी अछरन मंज़ लेखुन तु' अपनाबनु' युन यि छु सानि त'हरीकि हुंद कल्चरल पहलू ।

—शम्भुनाथ भट्ट 'हलीम'

वथ

रा'च़ हुन्द राद दे'वि-अ'हरम ह्यू बड्यव अस्मान ताम्
गाश वुछनस वां'स गयि, अ'न्यसारि ल'ग्य् छारन-छंबन।

वथ—स' ग्वसु' व्य'ज़ आ'स पतु'वथ सारिनु'य,
यथ खबर कू'त्यव बहारव पोश छ'क्य्—
जानवारव सोंतु' सुलि यिथ यथ ग्यवुन थो'व आयतन,
यथ ज्वयव थहि पान ला'यिथ साज़ वोय,
आरु'वल ह्यथ बालु'क्वल यथ ब्रोंठु' द्राय
यथ नु' हजिरु'च छाय स्यज़रस दोलु' रूज़
मायिम'त्य् ये'मि नालु'मति रु'ट्य् शोकु'-सान।
यथ रे'श्यव-मुनियव तपुक वरदान द्युत,
दीवियव ग्वसु' वथ द्वहय हमवार थ'व
लूक'-कल्यान करनि नेरान शिव यपा'र्य्
ये'ति नु' सर्पन ज़हर छकनुक रूद ज्वन
यथ नु' अख सिरसा'य ग'यि कुनि रा'स्य् जॉह
आदमस ये'मि जन्नतुक दीदार होव
कुल्य्-शिहुल यथ तापु-तावस सू'त्य् रूद
य'म्य् न' थो'क-बो'क त्रेशि बापथ क्रेशिनोव,

●

वाय, स्वय वथ का'न्य क'र रोत-मोकलव
मा'ल्य् मीरासस द्युतुख छ्यन वथ च'टु'ख,
खय ख'निथ ज़ोलुख नयन हुंद सबजु'ज़ार
कं'ड्य ब'विख' अर्खाल्य् नो'वरा'विख च्वपा'र्य्।
माय गा'जिख सग द्युतुख न्यायन-व्यनन
सोंथ यथ लवु'-म्वख्तु' छ'करावान ओस
ह'ट्य च'टिथ रतु'दा'व्य् ग'यि स्वय पोशिवथ
मसवलव ये'ति रो'व करान द्वह-द्यन गुज़ा'र्य्
लितरि सू'त्य् त'त्य् आयि द्वदु'-बब्रु' चीरनय!
यथ गुलिस्तानस सजान आ'स्य् लालु'ज़ार
खूनि नाहक सू'त्य् गव सुय मरगुज़ार!!
ये'म्य द्वहय र'छ का'शिर्यन हु'ज़ सथ तु' वथ
लाशि अंबर ह्यथ दु'यान कूता छि व्यथ।

(दो'युम तु' आ'खरी कु'स्त)

—रतनलाल शांत

ये'लि कृष्णु' बगवान क'शीरि आयि—II

[प'तिमिस अंकस मंज़ पो'रवु' त्वहि ज़ि ये'लि मोशूर व्याकरणाचारी पाणिनीयन 'अष्टाध्यायी' लीछ तमि विज़ि आसिहे 'महाभारत' पूरु' लेखनु' आमुत। महाभारतु' किस लिखा'रिस आ'स नु' क'शीरि मंज़ कांह खास दिलचस्पी। क'शीरि हुंद्य मोशूर इतिहासकार कल्हणन छु ल्यूखमुत ज़ि 'महाभारत' ग्वडु' विज़ि ओस 'गोनंद दो'युम' क'शीरि हुंद राजु' युस वां'सि किन्य ल्वकुट आसनु मूजुब ग्वदस मंज़ शा'मिल सपुद नु', हालांकि तसुंद मोल ओस बगवान कृष्णु' सुं'दि द'स्य् मारनु' आमुत तु' बुड्यबबन ओस बलरामस खलाफ ग्वदस मंज़ हिसु' न्यूमुत। शायद मा फिरहन कोरव बस पानस कुन; मगर तसुंदि शुर आसनन थोव सु लो'ब। कृष्णु' बगवानु' सुं'दि अथु' युथुय क'शीरि हुंद राजु' दोमूदर जंगस मंज मारु' गव' मसलु' वो'थ ज़ि क'शीरि क्याह बनि। कृष्ण जीयन म'शरा'व सा'रु'य दुश्मनी तु' आयि पानय क'शीर। ये'ति क'रु'ख दोमूदरु' सुंज़ि आशे'नि महारा'नी यशोवतीयि ताज पूशी। स्व बे'हना'वुख तख्तस। व्यदवा आसनु बाबजूद बनेयि यशोवती क'शीरि हुं'ज़ रा'नी। ब्रोंह कुन प'रिव····]

ज़ु' कथु' छे' अत्यन ब्वतलाम। अख यि ज़ि बगवान कृष्णस प्यव पानु' क'शीरि युन। दोयु'म यि ज़ि तिमव ओं'न यि द'प्यज़ि ति दुश्मन-मुल्कस मंज़ पनुन बोल बजाह। 'राज तरंगिणी' मंज़ छु कल्हण लेखान ज़ि कृष्णजीयन को'र यियु' क'न्य् का'शिर्यन खताब—

''क'शीरि हुं'ज़ बूमिका छे' पारव'ती। तुहुंद गछि याद थवुन ज़ि ये'त्युक राजु' छु शिवु' सुंदुय अख अंग, अख बंद आसान। सु राजु' आ'स्यतन क्युथ ताम्य् ति, ठुकुर या त्रकुर ति, तस पज़ि नु' नफरथ करु'न्य् ग्वदवय अ'स्य् पनुन रुत कांछान आसव तु'।''

यियु' क'न्य् वोनु'नख ज़ि रानि म क'डिव कु'ठ; यि दीश ओस स'ती हुंद सर—स'तियि हुंद थान—पारव'ती बगवतियि हुंद मसकन। रा'नी गछि पारव'ती मानु'न्य् तु' तस वफादार रोज़ुन।

असि छु मोलूम ज़ि यथ मुल्कस मंज़ छु खबर क्याज़ि अख खयाल रूदमुत ज़ि ज़नानु' बछि नु' हा'किम आसु'न्य्। इतिहासस मंज़ छि तिथ्य ति दोर आमु'त्य् ये'लि ज़नानन निचि नज़रि वुछुख, तिमन द्युतुख न समाजस मंज़ सु मकाम ये'मिचि तिम हकदार आसु'। व्यदवायि सू'त्य् हमदर्दी आसनु' बदलु' तु' तस ब्वतलनुक मोकु' दिनु' बदलु' खा'रिख तस सिरिफ लांज। युथुय कृष्णु' बगवानन यशोव'ती हुंद नावु'य योत ह्यो'तमुत आसिहे, ज़बर्दस मुखालफथ आसिहे सपु'जमु'च्। राजतरंगिणी तलु' छु असि

नमान ज़ि विरोद तु' प्रोट्यस करनस मंज़ आ'स्य् ब्रह्मन ब्रोंठ ब्रोंठ आसाम। तिम आ'स्य् नु' सिरिफ दार्मिक मामलन मंजु'य योत समाजस रहबरी करान ब'ल्यकि समा'जी तु' सिया'सी मामलन मंज़ ति आ'स्य तिमय् बुथि नेरान। कू'त्यन राजन कोंड तिमव नस्ति किन्य ति क्याज़ि राजन हुं'दिस जुल्मस ग्रोस न जबाबस कुं'हु'य व्वथान। लूख आ'स्य् दम-फुट्य आसान गा'मु'त्य्। अमी अंदाज़ु' ह्यकव अ'स्य् पानय सूं'चिथ तु' ज़ा'निथ ज़ि कृष्णु' बगवानु' सुंदिस अथ तजवीज़स क्याह प्रतिक्रिया आसि आमु'च। मगर राजतरंगिणी मंज़ छुनु' यिथि कुनि बिरोदुक या रदि अमलुक ज़िकिर। बस कुल बिल छु अख शलूख यथ मंज़ कृष्ण जी सुंदि अमि खताबुक हवालु' दिनु' आमुत छु।

अस्यन छि राजतरंगिणी सानि इतिहासुक मवाद पेश करान, सोरुय इतिहास नु'। इतिहासस मंज़ गछि नु' सिरिफ वाकातन तु' शखसियतन हुंद ज़िक्रिर या तिहुं'द्यन कारनामन हुंद उल्लेख आसुन ब'ल्यकि तिमव सूं'त्य हालातन मंज़ क्याह तब्दीली आयि, आम लूकन हुं'ज़ राय त्राय क्याह आ'स, यि ति गछि असि ननुन। खा'र, राजतरंगिणी हुं'दि अमि छ्वटि म्वटि जिकरु' सूं'त्य छु असि तमि व्वल-ह'रिशि हुंद अंदाज़ु पानय करुन य्वसु क'शीरि तमि विज़ि व'छमु'च आसि ये'लि अकि तर्फु तिमन राज़ु' (दोमूदर) मारु' गव तु' बे'यि तर्फु' य्यदवा रानि हुं'ज़ ताज पूशियि हुंद इंतज़ाम सपदनि लो'ग। ठीक छु ज़ि कृष्ण जी आ'स्य पानु' तमि विज़ि क'शीरि मंजु'य डेरु' दिथ। अमावो'ज़ यिथु' क'न्य तिम महाभारत य्वदु' पतु' तु' गीता वननु' पतु' लोकप्रिय बनेयि तु अवतार मानु'नु' आयि, स्व सूरथ् मा आ'स क'शीरि हुं'दि अमि वाकु' विज़ि। अख कथ छे' साफ ज़ि क'शीर आ'स ग्वडनिच स्व लेबार्ट्री यथ मंज़ कृष्ण जीयन पनु'नि राजनीती हुं'द्य, लूख पनु'नि रायि सूं'त्य् मुता'सिर करनु'क्स तजरुबु' क'र्य्। व्याख छे' यि कथ ति मानु'न्य ज़ि तिहंदि क'शीरि यिनु' ब्रोंठ आसिहे ज़रूर तिहुंद नाव, तिहुंद करुत क्रावुत, तिहुंद प्रबाव योर वोतमुत। लूकन हुंद अख बो'ड बारु' हिसु' आसिहे तिमन श्रद्धा न तय स्यठाय आदर करान। अ'म्य लूकु' जमा'च आसिहे ब्रह्मन बर्ग तु' राजु' दर्बार्य् वेतरि पानस कुन फिर्यमु'त्य् युथ कृष्ण जीयस पनुन मिशन कामयाब करनस मंज़ सहूलियथ आमु'च आसि। क'शीर आ'स शैव परपरायि हुंद गड, यि छु 'सती' हुं'दि ज़िकरु' सूं'त्य् ति ननान। अमि परंपरायि हु'ज़ि बुनिया'ज़ प्यठ आव पतु' यारियाहि का'ल्य शैवदर्शनुक म'हलखानु' इस्तादु' करनु'। मगर अमि बावो'ज़ूद छि' यि कथ ति अहम ज़ि बिष्णु या नारायाण-बख्ती हुं'ज़ ति आ'स ये'ति अख ज़ीठ परंपरा। श्री कृष्ण आयि नारायण सुं'द्य अवतार माननु' अवु' म्वखु' ति आसिहे क'शीरि मंज़ कृष्ण जीयस खास आदर तु' मान।

क'शीरि हुं'ज़ि अमि गटनायि सूं'त्य् छु श्री कृष्णु'नि चरित्रुक व्याख पो'ख ति गाशरावनु' यिवान सु गव यि कि तिम आ'स्य न बुलहवस या महत्वा-कांखी। राजु' दोमूदर मा'रिथ ह्यकु'हन तिम आरामु, सान क'शीर यादव क्वलु'किस सामराजस मंज़ शा'मिल क'रिथ। मगर तिम आ'स्य् न मोमूली पायिक्य सियासतदान। तिमव ज़ोन यी मुना'सिब तु' क'शीरि हुं'ज़ रुबदम्वख्ता'री थ'बु'ख बरकरार। पनुन असर रो'सूख इस्तिमाल क'रिथ दितुख भारतचन लोकतांत्रिक (जम्हूरी) रे'वायतन पोछर। महा-भारतु'किस य्वदस मंज़ गीतायि हुंद व्वपदीश दिनु' ब्रोंठ दिच तिमव क'शीरि अंदर रूज़िथ पनु'निस सोंचस तु' दर्शनस ग्वडनिच ख'हरन। (समाप्त)

शे'छ ब्वद

मे' छु श्री मोतीलाल साकीयस सू'त्य इतिफाक ज़ि अ'स्य छि वुन्यक्य पांडवन हुं'द्य पा'ठ्य जलावतनी हुं'द्य द्वह गुज़ारान। असि छि प'ज्य-पा'ठ्य पांडवन हुं'ज़ वनन गा'मु'च। अ'स्य ति क'ड्य कोरवव। वायान तु' गायान नु'; छ्वचि चूरन हुं'द्य पा'ठ्य। आ'खु'र असि क्वसु' सना लां'करन तिहुंज़ आ'स नीमु'च। तिमनु'य हुं'जि अकस'रियति को'र भारतस सू'त्य रलनुक फा'सलु' ति बयाज़ि तथ मंज़ अोस तिमन फा'यिदस फा'यिदु'। करोर बो'द र्‌वपयि लुटोवुख तु' बा'गरिथ ख्योख। आखु'रस गोख न सोन तति आसुन ति बर्दाश तु' सा'न्य वे'ग्वनाह नफर मा'रिख बेदर्दी सान। दारि ना कृष्णु' बगवान अवतार तु' असि दी तार।

—संजोग कुमार कौल, सरवाल, जम्मू।



'संपादकीयस' मंज़ छु वु' त्वहि वो'नमुत ज़ि 'कश्यप समाचार' छु सोन नुमायंदु'। मे' छु वासान व्वन्य, ज़ि कश्मीरी पंडित सभा छि सा'न्य नुमायंदु' आरगनिजेशन। का'शिरिस ति छि स्वय अहमियथ दिनु' आमु'च य्वसु' हिंदीयस तु' अंगरीज़ियस। अ'स्य छि का'शिर्य बटु'। का'शिर छि सा'न्य ज़बान। ब्रु'छुस बगवानस मंगान, पनु'नि बराद'री खा'तरु' कामया'बी।

—दीनानाथ रैना, पुरखू, जम्मू।

'कश्यप समाचारुक' का'शुर हिसु' छु' शूबिदार, अमि बापथ आ'स्यनव मुबारक। बगवान कृष्ण सुं'दिस जन्म दिनस प्यठ छु जान अंक कडनु' आमुत। मगर नज्मु' छे' ज़ु'य। का'शिरिस मंज़ छि वारियाह शा'यिर, तिमन हुंद रुत कलामु' गछि छपावुन।

—मोहन लाल फ़ोतेदार, बोडी।



का'शुर लेखनुक युस त'रीकु' त्वहि होवमुत छु-वु', सु हे'छनस लगि केंह काल, इसलिए छु म्योन गुज़ा'रिश ज़ि का'शुर परनु'क्य निशानु' गछ़न प्रथ लटि ग्वडन्यथ दिन्य, पतु' गछि वाकय केंह द्युन।

—नना जी भठ, दोंथली, अपर बाज़ार, पंजतीर्थी।



वु' अोसुस 'कश्यप समाचार' ब्रोंठ ति पराम। व्वन्य छु अम्युक का'शुर बोग प'ज्य पा'ठ्य परुन लायख। मोतीलाल साकी तु' जानकी नाथ कौल 'कमल' सुं'द्य लेख छि प्रथ रंगु' जान। कृष्णु' बगवानु' सुं'दि वहरवादि दोहु' तिमन हुं'ज़ि बख्ती तु' तिहंद्यन व्वपदीशन हुंद असली माने छु रुत पा'ठ्य दिनु' आमुत। ··कदमन मदथ···

—त्रिलोकी नाथ थपलू, सतवारी, जम्मू।



'कश्यप समाचारुक' का'शुर हिसु' छु जान। का'शुर छु स'हल लेखुन परुन। त्वहि छुवु' लेखनुक नो'व तरीकु' द्युतमुत। यिहि'छुन छु सानि खा'तरु ज़रूरी; मगर यि गछि वुनि द्वन त्रन र्‌यतन जा'री थवुन। अमि सू'त्य गछि असि Practice।

—तेज सप्रू, एम०ए०एम० कालेज, जम्मू।



KASHYAP SAMACHAR

Official organ of Kashmiri Pandits Sabha,
AMBPHALLA, JAMMU TAWI J&K, (INDIA)

DIWALI NUMBER

Vol. : V (October, 1994) Nos. : 8 & 9

Annual Subscription	Rs.	50/-
Price of this copy	Rs.	10/-
Annual Subscription outside India	US Dolars	30

CONTENTS

Printed at : GAYATRI PRINTERS Gurha (Bakshi Nagar) Jammu

FROM THE PRESIDENT'S DESK

Dear Brothers & Sisters,

Peace, prosperity and long life.

It is common knowledge which needs no evidence that for decades our community has been discriminated against by the government in respect of government jobs, government largesse like loans for business etc, and also in respect of granting of admission to various technical and non-techinal educational institutions. Our most meritorious students have at times been sacrified in favour of mediocre and sub-standard students belonging to the other community. All this was being perpetrated because the entire community did not have any common voice, thereby transmitting signals of tremendous weakness all the time. These signals of weakness were formed into a big current of helplesness over the year which ultimately encouraged the monster of terrorism to give a mightly heave landing us miles away from our homes and hearths just in a single stroke.

Much water has flown down the river Vitasta since we were forced out of our homes. Time has come for introspection and taking stock of the situation. It is time that we unite and speak with one voice. The responsibility falls on the shoulders of leaders of the various organisations. They must realize that to be able to make the government act rationally and constitutionally we must speak only with one voice. No one shall recognise our mite in case we speak with different tunes.

I again call upon everybody for forging a united front with a minimum common working programme. Let us not dissipate our energy in bickerings and petty issues.

Triloki Nath Khosa

EDITORIAL

ARE WE NOT UNITED ?

One of the general refrains of every Kashmiri Pandit is that the community is not united, which is considered to be the cause of its suffering. As an example we always quote that there are several organizations, sometimes duplicating their roles and sometimes working at cross purposes. In self-introspection if the community members feel that these fissiparous tendencies need be curbed and bring pressure on the various leaders to close their ranks, it could be a highly desirable exercise. But when some others, whose conscience is in no way disturbed by their own countrymen being uprooted from their homes, use these differences to serve a come-uppance to the community, it is a little too much to stomach. It is, therefore, necessary to analyse the extent of the differences within the community and to see how deep-rooted they are and upto what extent they have damaged the cause of the community.

It is rather fashionable to say that there is a difference of idealogy among the various organizations. What can be the idealogy of any Kashmiri Pandit organization other than that the community should go back to the valley with its dignity restored and be rehabilitated and assured of its basic rights as citizens of the country ? Until that end is achieved, it should be assured of a reasonably comfortable living and sustenance, education of children, in healthy surroundings, in keeping with the norms of such an educated and emancipated community.

It is true that the thinking process in the community was thrown out of gear by the traumatic experience of the dislocation, and for a short while there was a cacophony of voices. This was a pure knee-jerk reaction but after some deliberation two main opinions emerged. One insisted on a settlement in the valley as honourable citizens assured of security and religious and cultural independence while the other asked for a part of the valley to be carved for the rehabilitation of the community as a union territory. Is this an idealogical difference ?

Whether we are honourably rehabilitated as Indian citizens in whole or a part of the valley, are just matters of detail. The basic point is that the community insists on its right to live wherever it pleases within the country and that includes Kashmir valley, and since they have been forcibly evicted, this wrong should be righted and conditions created so that such actions are not repeated. Which Kashmiri Pandit organization has taken a position different from this ?

It is true that there are several Kashmiri Pandit organizations Barring one or two, all of them are non political. Even those which have a political mandate can hardly be classified as political parties. Within the Indian political scenario the K.P. community is neither a vote bank nor can it work as a pressure group. Inspite of that the Kashmiri Pandits are among the most politically conscious people. Before and after independence they contributed to the political thought of almost every party. That is the hallmark of a vibrant community. Sociologists classify communities in three categories based on their thinking process, viz. a community where the individuals do not think at all but have a group loyalty or loyalty to a leader, a community where the members think in an identical manner and a community whose members have different perceptions. The first category constitutes a tribe, the second a totalitarian party and the third a modern democratic society. A tribal society passes through all these stages during evolution and eventually with independence of thought heads towards humanism and global nationhood. The level of evolution in a community is determined by the capacity of the individuals to think differently.

Has the proliferation of the groups within the K.P. community damaged its cause ? The answer to this question is a difficult one. One thing is, however, clear. The political conscience and morality of our country is at its lowest ebb. Our politicians and governments do not act out of moral considerations but out of political compulsions. One of these compulsions for the rulers of the country is to keep the camps of the displaced people as showpieces. That accounts for the lack of will on their part to rehabilitate them in more congenial surroundings. Whether a single K.P. organization could have been successful in pressurizing them into action appears to be highly doubtful.



THE BHAGWAD GITA AND ITS COMMENTARIES

—Jankinath Kaul 'Kamal'

Mahabharata is the greatest encyclopaedia of knowledge. Srimad Bhagwad Gita forms the chapters from 23 to 40 of the Bhishma Parva.

The Gita Saptashati is the essence of the whole narration of Mahabharata by the celebrated Vyasa given to his scribe Ganapati.

The deepest knowledge of the Upanishads is expressed in the Gita in a nutshell as initiated by the Brahma Sutra.

There can be no book greater than the Bhagwad Gita available in the whole world. This completes the three monumental works (Prasthana Trayi) of top priority to human kind from the versatile pen of Adi Shankaracharya.

Science cannot give a discriminative decision of human life. It cannot take one to the supreme goal of life. Only the Gita can.

The Gita has the capability of constructing a balanced culture.

The Gita is the essence of all true knowledge of ultimate Reality. It is verily called the Upanishad-the mystic knowledge of non-duality. Science, inspite of its extraordinary capabilities, cannot solve the deepest and subtlest problems of humanity although it promises great convenience and comfort of external life. Bhagwad Gita, if owned properly, can penetrate the very recesses of human problems and solve them to the finish.

The Gita has been acclaimed as the only book of humanity for centuries past.

There have been commentaries on the Gita, written before the seventh century, but all of them are lost to us.

The first and the most authentic commentary written by Adi Shankaracharya in the eighth/ninth century, provides, therefore, the general guidelines to human mind. The following commentaries by Ramanuja, Madhava, Nimbharala and Vallabhacharya are different interpretations according to their beliefs and understandings.

The commentary on the Gita by Abhinavgupta is the shortest. It is the compendium of the monistic Truth explained according to the Trika Shaivism of Kashmir. The commentary of Sankarananda is the best interpretation of monism explained on the basis of the Upanishads and the Brahmasutra, end is endorsed by the Puranas, Nyaya and Nirukta. It affords a complete exercise on the realisation of the goal of human life in monistic Reality. This is the only best commentary on the Bhagwad Gita for a ready realisation of Self. It is the practical game of Truth. It is very study is Samadhi itself.

Shridhari Tika also is pithy and to the point. It suggests simple solutions of intricate problems of life.

The commentary of Vachaspati Mishra interprets Vishishtadvaita in a very convincing way.

There have been many other commentaries on the Gita in Sanskrit, but those could not become popular. Ramakanthi is one such in Kashmir Shaivism.

Jnaneshvari became very popular in Gujrat and some northern places.

In modern times there have been commentaries written in English by Aurobindo, in Hindi by Balgangadhar Tilak, Mahatma Gandhi (Anasakti Yoga), S. Radhakrishan in English and a host of others in many different languages. There are translations of the old commentaries also. But the main requisite is to study the Gita in its general perspective involving no interpretations. Aurobindo Ghosh's Essays on the Gita is very useful and is a noble exposition.

The Bhagwad Gita can be understood and interpreted in a number of ways, modes and beliefs—political, social, psychological and personal etc; etc. But its ultimate aim is one and that is Realisation of Self. We have to try to understand the way. □

OBITUARY

SH. TRILOKI NATH KARIHALOO of Dharmarth Road, Karan Nagar, Srinagar passed away on 28th August 1994 at Bedford Mass Boston U. S. A.

He is survived by :-

Wife	Smt. Durga Devi
Son and Daughter-in-law.	Ravi and Rajni.
Daughter and Son-in-law.	Raj and Pran Ticku.
Daughter and Son-in-law.	Sunita and Dr. Inderjit Padroo.
Grand Children	Romy, Roshy, Seema, Geeta, Neel and Warsha.

Grief Stricken :-

Brother	Sh B N Kaul and his Family.
Sister	Smt. Bimla Wattal and her Family.

SUYYA - (Some Verses from Rajatarangini)

—G. N. Mujoo

The story of Suyya, who trained Vitasta, constructed a barage near Sopore and on whose name this town (it is believed) is named has appeared in Kalhan's Rajatarangini. While I was going through this book—a verse by verse translation of the original by Shri R S. Pandit (Ranjit Sitaram who happened to be Pandit Jawaharlal Nehru's brother-in-law—Shrimati Vijay Laxmi Pandit's husband), I thought of sharing the relevant verses with those who have not read Rajtarangini and who read this journal, so as to give an unpolluted account of his feats.

Pandit Jawaharlal Nehru in his foreword to the book has written "Nearly half a century ago, Mr. S. P. Pandit wrote of Rajatarangini that it was the only work hitherto discovered in India having any pretensions to be consideed as history". This was written by him on June 28, 1934 while he was in Dehra Dun jail.

Shri R. S. Pandit writes of Rajatarangini that it is a poem in eight cantos. Each canto is called Taranga or wave. The author of this saga of Kashmir is poet Kalhana who commenced his compilation in the year 1148 AD (Saka year 1070) and concluded in 1150. The first translation of a portion of this saga was in Persian made by order of Zainul Abidin (1421-1452 AD). Akbar, the Moghul King ordered in 1594AD to complete the translation.

The first complete translation from original Sanskrit appeared in French in 1840-1852 AD. Translation in English was by Sir Aurel Stein in 1900 AD. Pandit Durga Prasada also translated it around the same time. Prof. Buhler also translated some verses.

Kalhana's work is not only a serious contribution to history but also a work of art as he was a Kavi (poet). Kalhana was the son of the noble Lord Canpaka—the great Kashmiri minister. He begins from about 1184 BC with Gonanda III but also refers to 1266 years preceding 1184 BC, during which 52 kings ruled and of whom all record was lost. He gives eye witness account of events of 1121 AD which occured during Sussala's rule. He gave a picture of political and social life of Kashmir upto the Middle Ages when Aryan rule came to an end with the defeat of Prithvi Raj

Chauhan of Delhi, about half a century after Kalhana wrote the poem consisting of nearly eight thousand verses.

The story of Suyya appears in the fifth Taranga of Rajatarangini and starts with verse seventy two of this taranga. There have been repeated floods in Kashmir during the reign of kings that followed Jayapida. Famines struck the land Then came Avantiverman, a meritorious king. He allowed Suyya to carry out his plans which was not only remarkable but set the tone of flood control & irrigation measures for future generations. The result of Suyya's work drastically reduced the price of rice from a peak of 1050 Dinnaras during famine and average of 200 Dinnaras during normal times to 36 Dinnaras per Khari (ancient measure of weight mentioned in Rigveda & continued till recent times in Kashmir). The story of Suyya ends at verse 120 of this Taranga.

The English translation of the relevant Sanskrit verses as it appears in the book is as under :-

"Through the merits of Avantiverman, in order to enable living beings to exist, the illustrious Suyya, who was the lord of food personified, was born on earth. (72)

By the acts which were the wonders of the world of this blessed man whose origin was not known, it became certain even in the fourth aeon that he had not been born from a woman's womb. (73)

Once upon a time a Chandala woman named Suyya while sweeping a dustheap on the street, found a new earthen pot with a lid. (74)

In it she saw, on raising the lid, that a baby with eyes like lotus petals was lying in the middle, sucking his fingers. (75)

"By some unfortunate mother this beautiful one has been abandoned", while she thus mused through tenderness, her breasts began to flow. (76)

Without polluting him by touch the infant, whose keep was arranged in the house of a wet-nurse, a Sudra woman, was brought up by her. (77)

With the name of Suyya, he grew up an intelligent man, learned in letters and became, in the house of a certain householder, a tutor for children. (78)

With fasts, baths and other religious observances, he won the heart of the virtuous aud scholars, during conversation surrounded him, who had a brilliant intellect. (79)

In their conversation when they complained of the devastation by water, he said, "I have a plan but without resources what can I do". (80)

Like a mad man he went on saying this regularly till the king having heard of it from spies was astonished. (81)

Thereupon after summoning him "What have you been saying ?" Thus the king enquired. "I have a plan" and the rest of it he repeated in the very presence of the king without tribulation. (82)

"He is crazy" said the entourage; the king nevertheless anxious to see the plan, placed at his disposal his own money. (83)

From the treasury, having easily secured many pots of Dinnaras, he hastened to proceed to Madavarajya by boarding a boat. (84)

Then in village named Nandaka, which was submerged in flood waters, after dropping one vessel of Dinnaras he turned back immediately. (85)

"To be sure this is only a crazy man," though the courtiers talked thus, the king on hearing this news became keen on watching how it would terminate. (86)

In Kramarajya, on reaching the locality called Yaksadara, Suyya cast a handful of Dinnaras into water. (87)

There the boulders having rolled down from the mountains overhanging both the banks had squeezed the Vitasta and made water run contrary to current. The famine stricken villagers in search of Dinnaras then removed the boulders from the stream and cleared the Vitasta. (88-89)

In this way, having drained that water in two or three days he had the Vitasta at one spot barraged with the help of astisans. (90)

With a stone barrage by Suyya, who worked wonders, the entire river, the offspring by Nila was tied up for a week. (91)

Having cleared the bed of the stream and after constructing stone embankments, as a countermeasure, against rolling boulders, he opened the dam. (92)

Being long detained, she, as if impatient for the sea thereupon started with a rush to proceed on way to the ocean. (93)

Covered with mud and sparkling with fish the land, when stripped of water, appeared like the vault of the sky which when free from clouds displays the gloom of darkness and is full of stars.

Wherever he learnt of breaches by inundation during disastrous flood, in each one of them, he constructed new channels for Vitasta. (95)

With several canals thrown out from the original mainstream, the river shone like a black female snake with numerous hoods resting on one body. (96)

After building stone embankments for the Vitasta for seven Yojnas, he brought the water of Mahapadma lake under control. (103)

From the basin of Mahapadma, the

Vitasta guided by him emerged on her course with swiftness like an arrow from the mechanism of the bow. (104)

Having thus reclaimed the land from the water like primeval Boar, he founded all types of villages teeming with numerous population. (105)

Neither Kashyapa nor Samkarsna had confered benifits such as were conferred with ease on this realm by Suyya of meritorious acts. (113)

The reclamation of the land from water, the bestowal of it to pious Brahmins, the building of barages with stones in water and the suppression of Kaliya which were achieved by Vishnu in four incarnations of righteous acts were achieved by Suyya, who had a mass of religious merit, in a single birth only". (114-115)

Some Explanations :-

1. Aeon - Yuga, age of the world.
2. Madavarajya & Kramarajya — The valley of Kashmir has been divided in two parts called Kramarajya, and Madavarajya, the modern Kamraz and Maraz. The former is below Srinagar and latter above the city on either side of Vitasta.
3. The four Incarnations referred to are (1) The Boar (2) Ramchandra (3) Parusrama & (4) Krsna.
4. Dinnaras was the local currency then. These were in gold, silver and copper coins. A hundred shell or Cowries were equal to one copper Dinnara.
5. Yojna is a measure of distance. One Yojna is four Krosa or about eight miles. □

DONATIONS RECEIVED BY K. P. SABHA FROM MAY TO SEPTEMBER, 1994

1.	M/s. A. One Tent and Light House, Rehari, Jammu	... Rs.	201/-
2.	Sh. R. K. Tikoo (Ex. President), Bhagwati Nagar, Jammu	... Rs.	100/-
3.	Sh. M. L. Aima, Jagriti Niketan, Jammu	... Rs.	200/-
4.	Shri Prem Nath Wakhloo, Talab Tillo, Jammu.	... Rs.	1,000/-
5.	Gupta Dhan	... Rs.	105/-
6.	Shrimati Mata Ji, Shakti Nagar, Jammu	... Rs.	100/-
7.	Sharda Sudhar Samiti, Jammu	... Rs.	300/-
8.	Shri P. K Kaul. Karan Nagar, Jammu	... Rs.	50/-
9.	Shri Jagdish Shivpuri, 291, D, Sarvodaya Enclave, New Delhi-110 047	Rs.	2,000/

Besides, the following members of the Executive Committee contributed Rs. 200/- each on spot for the medical assistance of a member of the Biradari. (This is over and above what was contributed by the Sabha, and thus was not entered in its books) :-
S/Shri T. N. Khosa, A. N. Thusu, S. K. Shah, C. L. Durani, P. N. Pandita, Kiran Watal, U. K. Bhan, Ashwani Kaul, B. L. Tiku, Ashok Khar, Ashok Braru, S. C. Dhar and Shrimati Kailash Mehra Sadhu.

KASHMIR FROM PAST TO PRESENT-I

—C. L. Durani

(In the following columns significant historical events of Kashmir are reproduced as narrated by eminent authors in their works).

INTRODUCTION :

Kashmir has a faithful record of her past preserved in the well known book Rajtarangini (River of kings) in Sanskrit verse by the learned Brahmin, Kalhana Pandit who lived in the twelfth century A.D. He is not the first historian of the valley. Many others preceded him to whom he is indebted for much of the material that he used in writing Rajtarangini. Kalhana has admited that he examined eleven works of the former scholars which contained the chronicles of kings as well as the doctrine of the sage Nila (i.e Nilamatapurana). Reputed among his predecessors are Helaraja who flourished in the eighth century A.D. Ratnakara who lived in the reign of king Avanti Varman (855-900 A.D.) and Kshemendra of the time of king Kalsa (1063-89 A.D). Suvrata was also an ancient historian who condensed the other chronicles in order that their contents might be easily remembered. None of these ancient histories except the Nilamata Purana is extant.

Kalhana was the son of Champaka who served as minister of king Harsha (1089-1101 A.D). It is believed that Kalhana also held a responsible post in the Government of Kashmir during his own time before he wrote Rajtarangini. He was a resident of Parihaspora (modern Paraspora) and a votary of Shaivism but not a believer in the Tantras. His admiration for Buddism and tolerance for other cults are worth noting.

Kalhana was scrupulous, responsible and careful in writing his chronicles. He was a keen observer and a fair minded historian. He looked at political, religious and social problems of the country with a critical, unbiased and objective eye. He has, commented fearlessly on the opinions and doings of kings, nobles and common folk, not only of ancient Kashmir but also of those living in his own time. After Kalhana, the writing of history was continued. In the time of Zain-Ul-Abidin (1421-72 A.D.) Jonaraja and Srivara brought down the narrative to their own day in

their works known as Rajavali and Jaina-Rajtarangini respectively. These records cover events till 1486 A.D. Zain-Ul-Abidin got Rajtarangini translated into Persian calling it 'Bahar-ul-Asmar', by one of his courtiers named Mulla Ahmed. The task was further taken up by Prajabhat who wrote Rajavalipataka in 1512 A.D. Shuka worked on Rajtarangini in 1596 A.D. In fact Shuka was the last histrorian who wrote Kashmir history in Sanskrit verse. Among the historians who wrote in Persian, distinguished ones are Haider Malik (1659 A.D.) Narain Koul (1710 A.D.), Mohammed Azam (1747 A.D.) and Birbal Kachru (1850 A.D). The work was continued by several recent writers notably Pirzada Hassan, Prakash Ram, Hargopal Koul and many others. Among the notable scholars who have translated Rajtarangini into English are R. S. Pandit and Sir M. A. Stein.

The known history of the civilised man in Kashmir begins according to Kalhana from 2450 BC when Gonada-I ascended the throne and laid the foundation of the monarchial system of Government in the valley In all twenty one dynasties ruled Kashmir till 1339 A.D. when the Muslims finally captured power and a foreigner Shah Mir ascended the throne.

THE HISTORY BEGINS WITH AN EPISODE :

The history of Kashmir opens with an interesting episode. Gonada-I went to war with Krishna of the epic fame on the side of his relative Jarasandha, king of Manadha. He laid a siege on Mathura but was killed. His son Damodara met the same fate at Gandhara (now east Afghanistan. Then the dowager queen Joshovati was installed on the throne. As matter of fact nothing is known about thirty five out of fifty two kings of the earliest dynasties. Kalhana gave them as lost because their history was not available to him. However, one of these kings of the Pandu dynasty, Ramdeva by name is said to have vanquished as many as five hundred kings and brought the whole of the subcontinent of India from the Bay of Bangal to the Arabian Sea under his sway.

The Mauryan Emperor Ashoka (247 BC to 237 BC) conquered Kashmir in the middle of the third century before Christ. Probably it was for the first time that the valley came under foreign domination. But this enslavement did not prove an unmitigated evil because Mauryan imperialism had degenerated and become an instrument of reaction, cruelty and supression. The ruling classes headed by a section of short sighted Brahmins became demoralised. A story is recorded that in the days of king Sundarasena, God became so annoyed with the evil deeds of the citizens of Sandimatnagar, the capital, that He warned Katal, the only good man in it, in a dream and asked him to leave the city early next morning.

Continued on Page 42

RETURN OF MIGRANTS TO BE DISASTROUS

—Avtar Bhat

There are wide ranging speculations that Central Government is working on a strategy for return of Kashmiri migrants to valley, who have been hounded from there five years back after the Pak sponsored militancy gripped the entire Kashmir Province.

These speculations proved a reality after union Minister of Tourism and Civil Aviation, Mr. Ghulam Nabi Azad in an interview to local Doordarshan here on June 9 when he was on two days official visit to Jammu and indicated about government's plans in this regard. Mr. Azad in his interview said that government is trying to create the conducive atmosphere in the valley for the return of migrants.

Though Mr. Azad expressed his dismay at the state of affairs in the valley where the militants rule the roost, yet he said that government is ready to provide security to the migrants for their safe return, who were putting up as refugees in various parts of country, despite having their own homes in the Valley.

However, the Union Minister affirmed that no decision will be taken without taking the migrants into confidence as the acceptance of migrants will be a precondition to the move. Previously it was the former Chief Minister of state and National Conference Chief Dr. Farooq Abdullah who had initiated a campaign in this regard. Dr. Abdullah along with some prominent National Conference leaders visited the various migrant camps to woo the displaced community for return.

But after the killing of some National Conference leaders in the state and indifferent attitude of Central Government to Farooq package formula, the former Chief Minister again prefered hibernation as there were no takers of his political process in the valley.

According to highplaced sources the Central as well as the State government is very much particular in initiating political process in the valley which is prelude to normalcy. But any such process towards this normalisation would be incomplete without the return of migrants. It appears that Central Government after getting a luke-warm response from the former Chief Minister has now entrusted this job to Mr. Azad who unfortunately though being a state

subject is ignorant of its total political situation.

If a cognisance of Mr. Azad's statement is taken there is every indication that government wants to make the migrants a scapegoat at such a time when the number of foreign mercenaries has considerably increased in the Valley. As the sources put it that eighty percent among the militants are foreign mercenaries who infiltrate in the valley daily and there were so many safe tracks of their infiltration which have not so far been traced by the security forces.

Even the providing of security seems unsound and majority of migrants have outrightly rejected such a move. According to these migrants such security cover has not proved useful even for the political workers and leaders as a countless number of them was gunned down by the militants despite protection. These migrants further point out that no doubt they were eager to return to the Valley and will welcome any move in this regard but at the same time apprehend disastrous results of the move at this juncture.

These migrants instead suggest that before floating the feelers about the return of migrants to valley the government should seek the proper support of the majority community and eliminate the gun culture completely from there. As the return of migrants to Valley is only possible after the majority community accepts them open heartedly which is not possible under the present circumstances.

Commenting on Azad's statement a Kashmiri migrant leader said that before taking any initiative of migrants return the Central government should first set the various organs of Home Ministry in order, as there is no unanimity between the Home Minister Mr. S.B. Chavan and his junior, on the Kashmir policy. Whatever the statement the former gives is being contradicted by the latter next day thereby sending wrong signals to the militants.

Terming the statement immature the migrant spokesman said that instead of talking of the return at this juncture the Central government should come out with a "package formula" for their rehabilitation who have become the worst sufferers of the ongoing militancy. The spokseman also turns the government's attention towards the growing unemployment problem among the migrant youth and demanded immediate measures for their absorption in the government jobs. □

(Continued from Page 40)

When he did so, Sandimatnagar was submerged alongwith the king and its inhabitants. The site of the city is now occupied by the Volur take.

Buddism came with its doctrines of love, pity, universal brotherhood, spiritual discipline, high morals, equality and liberty for all classes and both sexes, so the Mauryan imperialism proved a blessing in disguise.

......*(To be continued)*

IN A LIGHTER VEIN—I

ONE UPMANSHIP

—S. K. Shah

[One of the most important traits of humans, which makes life worth living and takes out the tension from mundane existence and its ups and downs, is a sense of humour. It is said that the Indians in general have a poor sense of humour, which makes them morbid, introvert and sometimes even cruel. It also generates sadistic and violent tendencies. Inspite of our claims to the contrary, it is a fact that Indian society, which includes the whole sub-continent, has a violent streak about it, and accepts the same as a norm. This can be ascribed to a treacherous history along which somewhere the humour got drained out of our system.

Strange as it may appear, Kashmiri people, inspite of their violent history, have retained some degree of humour as compared to many others in the sub-continent. Humour and sarcasm in the from of folk tales and the famous "Ladishah" was very popular in Kashmiri society. Bawdy jokes, inventing nicknames, boisterous guffaws etc. are typical Kashmiri traits. However, while Kashmiri people generally laugh at others, it is very difficult for them to laugh at themselves. It is said that more confident and self-assured an individual, a community or a nation is, more is it able to laugh at itself. In the European society, the Scandinavians are said to have a great sense of humour, mostly directed at their own selves or fellow Scandinavian nations. And what a self-assured and emancipated lot they are. Nearer home, the Panjabis are a lively people with a penchant for laughing at themselves. Till recent times Sikhs themselves would endlessly narrate Sardarji jokes, till a loss of self-confidence through political manoeuvres robbed some of them of this admirable trait. It is time that Kashmiri Pandits who have thrown off the yoke of insecurity in the valley, generate a self confidence and learn to laugh at themselves, as individuals and as a community. While it will take morbidity out of their systems and allow them to enjoy lighter side of life, it could also probably lead to self-introspection and eventually self-correction. The following is the first article of the series which should be taken in the same spirit. After all

once a while we can afford to look at ourselves without much seriousness and have a hearty laugh at our idiosyncracies. We deserve it after so much tears and turmoil.]

Nowhere does a Kashmiri Pandit use his ingenuity and ready wit so dextrously as in the art of one upmanship. What is one upmanship ? It can mean a lot of things to different people, but one upmamanship, Kashmiri style, can be summed by a common Kashmiri idiom *Jcheti Woni Jravun*. Translated literally it means throwing dishwater on somebody. It is not difficult to guess the genesis of this phrase. Throwing dishwater from the windows over unsuspectiong passersby in the lanes of Srinagar used to be a common pastime, especially for ladies. This was followed by an exchange of choicest invectives till one of the parties ran out of its vocabulary.

The phrase means to cut down a person to size. For doing that you have to prove him wrong or inferior to you, preferably the latter. I have yet to see a Kashmiri Pandit, young or old, male or female, literate or illiterate, rich or poor, leader or follower, resident of Jammu or Timbuctoo, who can resist the temptation to indulge is this pastime, whenever an opportunity is offered. One derives a vicarious pleasure out of it, especially if the other person is your rival in any field, of course other than business and trade Business rivalry was never known among Kashmiri Pandits for they would not deign to indulge in such a useless and bemeaning enterprise as business or trade. Even if they would, they could not admit that. The question of competition in this field could not arise.

The rivalry is generally personal. It is acute if the other person has the gift of the gab (which is not uncommon in the community) and appears smarter. On top of that if he is cocky, he asks for a dose of *Jcheti Woni*. Even otherwise rivalry or no rivalry, one upmanship is more often a rule than as exception.

The one upmanship can sometimes take a bizarre form and the line of argument becomes farcical and ludicrous. But with its practisers it is not the means that matter as long as the end is achieved. If the target is humbled and has no answer or walks away in a huff, like a dog with tail between its legs, one can presume to have succeeded in his endeavour.

By now it is expected that the reader has got a fair idea of what one upmanship, Kashmiri style, is all about. If he has not, here is a factual sample of one upmanship, or is it one up (wo) manship.!!!

Bimla Ji was worried. Her young son, Vivek was down with fever for last seven days. No amount of treatment would bring down the temperature. In her upset state, in walked the elderly Shobawati, who lived nearby, presumably to enquire about Vivek's health and to console Bimla Ji. Shobawati's son Jagan Nath and Bimla's

husband Mohan Lal were together at school. Jagan Nath was brighter of the two and always scored more marks at every examination. He eventually graduated and became a teacher. Mohan Lal, being no good at studies, went into business and became a contractor. He earned a lot of money and, inspite of having lost his property in the valley, he was affluent by all standards. Jagan Nath's only source of income was his salary. Understandably Jagan Nath and his family were not taking kindly to Mohan Lal's affluence.

"Bimla, How is Vivek today ?" asked Shobawati.

"The fever does not come down. It is seventh day now. I am all worried," complained Bimla.

"So what ? When Pintu, may my life be dedicated to him, was ill his fever lasted more than fifteen days. What does the doctor say ?" asked Shobawati.

"Pneumonia, to his enemies."

"Ah ! You know, Pintu had double pneumonia, never again. What has he been prescribed ?" contined Shobawati.

"He has to take those red capsules every six hours and several other medicines. You know, each capsule costs six rupees," bemoaned Bimla.

"Yes" replied Shobawati, "the doctors prescribe very expensive medicines. Pintu's medicine bill was hundred rupees per day. The multicoloured capsules he was prescribed cost twelve rupees each."

"Vivek's temperature is high. It stays at 102 the whole day." Bimla said.

"So what ?" Shobawati exclaimed, "Pintu's temperature was 202 all the time."

"But" protested Bimla, "the temperature never goes to 202."

"That is exactly what the doctor said," Shobawati declared triumphantly, "the temperature never goes to 202 and that is why it was dangerous because it was an exception in Pintu's case." □

RELIEF TO THE MEMBERS OF THE BIRADARI

Inspite of its meagre resources, the Kashmiri Pandit Sabha Provided financial assistance to the tune of Rs. 7425/- to 32 needy families of the Biradari, ranging from Rs. 150/- to Rs. 500/-, in each case. To protect the dignity of these families, the names are not being published. However, the problem is acute and there is a great paucity of funds. *We appeal to the Biradari members to donate liberally to help these unfortunate members of our community.* Each rupee donated by you will be useful in mitigating their suffering. Send your cheques to Kashmiri Pandit Sabha, Ambphalla, Jammu. Also indicate whether you would like your donation to be used for relief, medical assistance, marriage of the girls, education of children or religious purposes. Not only will your donation be acknowledged but we shall also let you know how it was utilized.

SWAMI ISHWAR SWAROOP MAHARAJ ISHBER ASHRAM, KASHMIR

—A. N. Thusu

The Divine and supremely spiritual attributes of Swamji are beyond the pale of of mundane imagination and defy description. He was one supreme being who bestrode this earthly planet like the greatest of the great hierarchy and galaxy of Saints, Acharayas, Philosophers, Yogis in one compact, who preceded him in the propogation of philosophy and of Yoga and then practise in letter and spirit in spreading the philosphy of Kashmir Shaivism. With the six shells (Shath Kanchaks) of ignorance within which one's true identity with the Supreme cannot be normally discernible, except by process of evolution of inner personality with Divine Master's Anugraha, it becomes difficult to describe Swamiji, the Indescribable. The ineffable perceptions that cannot be spoken in the medium of any vehicle of thought i.e. any language, were radiated by Swamji with great abandon and these could be felt only by the "Antaha Karnas" (I have no equivalent word in any other language). Swamiji symbolised himself as an Avtar among Avtars who preceded him, by manifestation of Supreme Shiva in physical existence on this planet. In this respect he was like Rama and Krishna or even Rama Krishna Parmahamsa, Shri Aurobindo and the Shaivite Yogis and philosophers who appeared as Avtars on the soil of Kashmir from 12th Century onwards from Attri Gupt, Abinav Gupt, Khem Raja, Utpal Dev, Vasugupt to name only those whose propogation of Philosophy of Kashmir Shaivisn, through their writings which transcend their message in these spheres till advent of Swamiji in 1909 AD in Kashmir.

Swamiji's father was a devotee of Swami Ram. When Swamiji was born, Swami Ram on hearing about birth of this glittering soul said in utter jubilation that he should be named "Lakhman". Swamiji being a born vegetarian from last many births would make his mother to vomit when she cooked and ate mutton. At the

age of seven while playing with a few boys in the rear compound of his father's house at Fatch Kadal he saw "Badhi Khota Bodh" (the Supreme Being) coming out of skies and descending in the playground seated on his Nandi (Bull), when he started playing with him amongst other boys assembled there. He informed his elder brother Shri Maheshwar Nath Raina about this incident. His elder brother became very curious and asked Swamiji to show him the boy seated on bull, when he joined their play next evening. The incident of the previous day was repeated when the boy astride the bull joined for play with Swamiji, he rushed to "Maheshwar Kak" to come out and see the Divine being who had joined him in play. When his elder brother came out he found only the mohalla boys playing and not the Divine being. Swamiji remarked that he had vanished in the meantime.

Swamiji got an independent house on the bank of "Mar" near Mangleshwar Bhairov for his initiation where he resided for about 10 years. Swamiji's inner urge drove him to Sadhu Maliun (a place in the north of Kashmir) about 100 Kms from Srinagar, by leaving his independent house at the age of sixteen, without informing his parents. They were put into great hour of trial and tribulation and deep anguish by this unannounced departure of Swamiji to an unknown destination. In a short time later on through the good offices of Sukh Dev Ganjoo of Sopore, a close friend of his family, it became known that he had seen Swamiji go to some place in north for meditation and he located him at Sadhu Maliun along with his father and a relation of Swamiji. They found Swamiji, perched atop a pine tree with three branches into which he had seated himself on a wooden plank to meditate for weeks past. After great persuation they prevailed upon him to return home. Swamiji agreed to return on the express condition that his father (Shri Narain joo Raina, an inventor of House Boat Industry for its manufacture) should build for him a house atop Ishber mountain above human habitation commanding the view of Dal Lake, Srinagar, Shankaracharya, Hari Parbat and the northern parts of the valley including Mahadev, Harmukh etc. This was done and Swamiji established his firm feet for meditation in seclusion. Afterwards Sharika ji, his Pradhan Shisha (chief disciple) also got a house built by her father in the next plot of land north of Swamiji's Ashram. This Ashram became a vibrant centre of learning for Yoga and Philosophy of Shaivism in a habitat and environment incomparable to any parallel in the world. Swamiji made a small cave atop the hill above his Ashram where he had long spells of meditation weeks together at a stretch where he would be only accessible to Sharikaji or Prabhaji, her sister who joined the Ashram in later years, and also Gopinath (cook), who would pass on by turn, only water and milk to Swamiji to be deposited in the niche of the cave at a small window level. It was here that the congre-

gation days for Swamiji for devotees to be given discourses were fixed on Sundays. More and more devotees joined the stream of aspirants wishing to get Darshan of Swamiji and Sharikaji who had also risen very high in spiritual practices initiated by Swamiji. Foreign aspirants like Lady Silburne and others also used to receive lessons or hear discourses of Swamiji from the Shaivite seriptures particularly Shiv Sutra by Vasugupta, Bahrup Garab, Vigyan Bhairov, Krama Paradipika, Sampachashika Tantraloka (37 Ainiks in 13 Vols, by Abhinava Gupta), Shivastatravali (by Utpaldeva) just to name only a few, as the list is inexhaustible. The verdant lawns of Ashram with apple, pear. cherry, plum, almond and many other varieties of fruit trees were grown on all patches of the lawn of the Ashram, walled on all four sides. Swamiji was having his personel living room on the second storey of brick and timber house built on the northern side of the plot. It was in these sylvan and idyllic surroundings that light radiated to illumine the trodden and untrodden path of the Shaivite Philosophy, and this light shone upon the Kashmir valley but had a global acceptance of people of various faiths, "Zen Bones & Zen Flesh" a book written by a Japanese author also discerned, after meeting Swamiji, the commonalities of approach between Kashmir Shaivism and Zen philosophy of Japan. One Italian devotee of Swamiji translated Tantraloka into Italian. John Hughes and Dennise Hughes, American disciples inducted into Ashram in subsequent years taped the discourses of Swamiji in an erormous number of cassettes and also a couple of other small books.

It was at the mountain-side Ashram that brought within its fold ardent devotees from the valley and outside as well as abroad, Sarva Shri Nila Kanth Shastri, Makhan Lal Kokiloo, D. N. Ganju, Amar Nath Ogra, Lalita Wariku, Prabhawati Wariku, Shambu Nath Wariku, Jagan Nath Patwari and his brother Brij Nath Patwari, Udhey Nath, Nath Kamat, Raghu Nath Warkiu, Nandlal Wariku, Khema Devi Moza, Kamla-Wati Trisal, Nila Kanth Baqaya, Janki Nath Labroo, Som Nath Saproo, Soma Rani Saproo, Prithvi Nath Qazi, Sat Ram ji (Vedantist), Sammit Prakash Dhar, Inderjit Raina and his family and other devotees from the valley and from rest of India and abroad came in close touch with Swamiji and benefitted by his teachings and some of them by his "Divine Initiation". They are all embodiments of humility and have imbibed the values of Shaivite philosophy, by tho Divine will of Swamiji. Some of them are writers, Poets, songsters, Bhajan and Arti singers, musical instrument players all permeated by deep affection, devotion and dedication to Swamiji who was worshipped by his devotees as incarnation Lord Shiva.

It was around late fifties that Swamiji shifted to another Ashram below the Sarishwar mountain in close vicinity of the hill-

side abode of Abhinav Gupta, which was visible from the new Ashram by the side of Nishat a head of Ishber village.

In the year 1948-49 the writer of this humble version met Swamiji outside his upper Ashram close to service conduit carrying water from Harwan Reservoir to Nishat. Swamiji desired that I should see him inside the Ashram for some work. As I entered, the beaming Swamiji came forward to meet me half way to Ashram door and to accost me and it appeared he looked pleased on seeing me as a youngman of 24 years, then working as an Assistant Engineer on the construction of the new service conduit from Harwan to Nishat. He desired of me to look into the water supply problem of the Ashram after abandonment of the old conduit. This was to follow in normal course but Swamiji being highly meticulous wanted to have things done as per rules and not in undue hurry for him. I could perceive the sense of high discipline which Swamiji exhibited in his first talk with me. Things were accordingly taken care of. I was transferred in early 1950 to another project and thus I lost further contact with Swamiji. But the fire had kindled and seed he had sown in my mind by his Divine presence was exerting its sway over me and it was not unoften that we met, courtesy Warikoo Sahib, at some of the marriage ceremonies which Swamiji came to bless personally. He would call me, sending warikoo Sahib in the crowd, and on being prostrate before his sacred feet he would always bless me. A spark went down my spine on each Divine touch of Swamiji.

In 1959 Prabhawati stopped me at Littlesons Petrol pump and asked me to carry Swamiji, Lalita Warikoo and Prabhawati Warikoo to the Ashram which I readily agreed to do, deeming it an Anugraha by Swamiji to me. I dropped him at the Ashram when he blessed me and asked me to come in for tea. Since I was in a hurry I got myself excused with the promise that I would make it to Ashram some day. So in 1968, I and Khemaji Thusu (my wife) made it to Warikoo home in Gandhi Nagar on a word that Swamiji was there since some time. When we met Swamiji he told us that we were late in coming and asked reasons for it. We could not readily comprehend the meaning of this question. We said falteringly that perhaps it was because of destiny. Swamiji smiled and desired us to meet him on any Sunday at Ishber Ashram, which we did in summer. I was Chief Engineer at Kangan at that time. Swamiji said that we may come on every Sunday for Puja, which we adhered to for all the years that followed barring some brief spells when we were not in the valley.

We gradually took to reading of Shastras although it was a novel experience for us. We knew the rudiments of the language but no Vyakaran (Grammer). But Swamiji encouraged us to continue reading and

listening to discources at Ishber where a library of Sanskrit books was also kept and arranged by Swamiji which is there till date. My wife had a better opportunity of reading a wider coverage of books on, Shaivite philosophy under Divine tutelage of Swamiji but I would also try to make it whenever possible because of exigencies of responsibilities of a government servant as head of a major hydel project at Kangan and at Baramulla later. Shivsutir, some ainiks of Tantraloka, Shivostotravali, Paratremeshika, Adyatmik Bhagwat Gita and a few other books including Guruastoti Mahemnapar etc. fell to my lot to study of which mostly Kashmiri and sometimes English versions were taught to me alongwith other disciples at the sacred feet of Gurudev Maharaj, Swamiji whose blessings shall guide all his devotees/disciples like me and shall make our journey of life Smooth here and hereafter. □

BIRADARI NEWS

Fifth Janamashtami in exile :

A sizeable number of the community members participated in the Shoba Yatra on August 27, which was organized by Kashmiri Pandit Sabha, Jammu. in collaboration with other Hindu organizations. The tableau followed by several hundred devotees passed through the bazar of old Jammu and culminated at Raghunath Temple. On 29th afternoon a religious function was organized at Kashyap Niwas, Ambphalla. This was presided over by Pandit Janki Nath Kaul 'Kamal', a religious scholar of eminence. The President of the Sabha, Pandti T. N. Khosa welcomed the participants and gave the details about the activities of the Sabha. Religious discourses on the teachings of Bhagwat Gita were given by Pandit Prem Nath Shastri and Acharya Moti Lal Brahmchari in addition to the Chairman Pandit Kamal. The function was enlivened by Slokas from Gita and Bhajans Sung by Shrimati Kailash Mehra Sadhu in her mellifluous voice. On this occasion the Janamashtami number of the "Kashyap Samachar" was released by Pandit J. N. Kaul, President, All India Kashmiri Samaj, New Delhi. Two boys of the community were awarded cash prizes, Master Lokesh Zalpuri for his bravery and Master Ajay Raina for his performance as Lord Krishna in the Shoba Yatra.



Symosium on "Role of Woman in Exile :

On August 24, Daughters of Vitasta the women's wing of Panun Kashmir organized a symposium in Abhinav Theatre, Jammu which was very well attended. The included Shrimati Vijaya Kaul, Shrimati Phoola Choudhry, Shrimati Anita Kaul, Prof. Sushila Bhan and Dr. Shakti Bhan. In addition songs and several cultural items were presented.



Homage to Martyrs :

Martyr's day was this year also observed to pay homage to hundreds of Kashmiri Pandits who laid down their lives fighting terrorism. September 14 commemorated the fifth anniversary of the martyrdom of Pandit Tika Lal Taploo. Two large public meetings were organized on this occasion. In the morning, Panun Kashmir organized a meeting in the Zenana Park which was addressed among others by Dr. Subramaniam Swamy, Balraj Madhok and Dr. Agnishekhar. In the afternoon a meeting was organised in Gita Bhawan by ASKPC which was presided over by Pandit T. N. Khosa. The speakers included Pandit Amar Nath Vaishnavi and Shri Shadi Lal Sharma, who was the chief guest.



......*Continued on Page* 52

MATRIMONIALS

* Wanted alliance for smart KP boy 30 +/165/3100 + perks, M Sc. Physics with computer science diploma including C language and Unix operations, working as an officer in an established reputed industrial concern at Delhi and for slim, fair complexioned homely girl 28 +/155 M Sc Physics with computer science diploma working as computer instructor in a reputed institute of education and research at Jammu. Correspond with Tekni, Biodata and family details to Kaul, 80, Patel Nagar, Talab Tillo, Jammu

* Wanted a suitable working match for a handsome boy 31/5'-5½' /4400, B. Sc. D B A working for State Bank of India (job transferable). Contact or write to Dr. Ashok K. Dhar, E-16, Medical Enclave, Behind K.C. Theatre, Jammu-180001.

* Wanted KP Boy Doctor/Engineer/ CA/MBA/ACC for beautiful, smart, accomplished KP girl B. A., B Ed. doing M. Sc. (Maths) 27/159, belonging to well connected family. Correspond with Bio-data/ Tekni : K. K. Raina, House No. 74, Shastri Nagar (Nai Basti), Jammu-180004.

NOTE : Box numbers are also available in case the advertisers do not want to give their names and addresses. There is no additional charge for this facility.

......*Continued of 'Biradari News'*

Bhoomi Pujan of Mata Khir Bhawani Temple at Delhi-Baghpat Road

Bhoomi Pujan and Foundation laying ceremony for the Mata Khir Bhawani Temple at Delhi-Baghpat Road, Tehsil Loni, District Ghaziabad, U.P. is being held on 12th October, 1994. Mata Khir Bhawani Trust invites all devotees on the occasion.

News of postings, achievements, retirement etc.

1. Two senior professors in the University of Jammu retired after a meritorious career spanning several decades. They are Professor P. L. Kachroo of the department of chemistry and Professor P. L Duda of the Biosciences department During their tenure both these dons occupied the chair of the Head of the respective departments and were the conveners of the respective boards of studies. They have outstanding research to their credit and have supervised several scholars for the Ph.D. degree.

2. Professor C. L. Sadhu, retired Principal, joined as a senior lecturer in M I.E R. B.Ed. department, Professor Sadhu has specialization in Educational Planning and Vocational Education guidance.

3. Vivek Raina S/o Dr B L. Raina qualified the Joint IIT Entrance examination in 1994. He is the first ever and the only displaced candidate from J&K Board to have qualified in the first attempt He has also qualified for DCE, CET (Punjab), ISM (Dhanbad), CEE (U P) He is now studying at IIT, Kharagpur. CONGRATULATIONS VIVEK, KEEP IT UP !

APPEAL TO
KASHMIRI PANDIT BIRADARI

Brothers and Sisters,

Namaskar. You are already aware that the community is passing through most difficult period in its tumultous history of five thousand years. A marathon effort and sacrifice is needed by every member of the Community. We can start by simplifying our cumbersome and wasteful practices related to marriages. This will help the weaker sections in our society who are otherwise already in dire straits.

Let us therefore resolve to :

1. Do away with the practice of "Ghar Achun". We have lost our homes. Where is the relevance of this activity.
2. Try to have Lagan only during the day as was the practice in the Valley.
3. Restrict the Barat to a maximum of 75 people.
4. Stop the practice of having fireworks and band on the occasion of reception of Barat.
5. Stop serving meat on any of the days during marriage celebration.

Brothers and Sisters, now is the time to act. We owe it to our children and future generation to simplify our rituals and respond to the demands of the times.

TRILOKI NATH KHOSA
President

पच्चांग दर्पण

असूज कृष्ण पक्ष 5070 (अक्टूबर 1994)

अक्टू	मू	तिथि	वार	श्राद्ध	संक्षिप्म विवरण
1	15	एक. दि	शनि	पूर्व	इन्द्र एकादशी।
2	16	द्वा. दि	रवि	पूर्व	——
3	17	त्र्यो. दि	सोम	पूर्व	——
4	18	चतुं दि	भौम	पूर्व	पित्रामावसी।
5	19	अमा दि	बुध	पूर्व	नवरात्रारम्भ, त्र्यहः।

असूज शुक्लपक्ष

6	20	दिती प्र	गुरू	स्व	यज्ञोपवीत। विवाह।
7	21	तृती. प्र	शुक्र	स्व	——
8	22	चतु प्र	शनि	स्व	विवाह
9	23	पंच प्र	रवि	स्व	यज्ञोपवीत।
10	24	षष्ठी प्र	सोम	स्व	कुमार षष्ठी, विवाह।
11	25	सप्त दि	भौम	स्व	
12	26	अष्ट दि	बुध	पूर्व	दुर्गाष्ठमी, विवाह।
13	27	नव दि	गुरू	पूर्व	महानवमी, विवाह।
14	28	दश दि	शुक्र	पूर्व	दसेरा, पचक आरम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह।
15	29	एका. दि	शनि	पूर्व	पापांकुश एकाद।
16	30	द्वा. दि	रवि	पूर्व	
17		कतक त्र्यो. दि	सोम	पूर्व	मसान्त।
18	2	चतुं दि	भौम	पूर्व	संक्रान्ति व्रत
19	3	पूर्णि दि	बुध	पूर्व	पचंचक समाप्त, विबाह।

कार्तिक कृष्णपक्ष

20	4	प्रति प्र	गुरू	स्व	विवाह।
21	5	द्विती प्र	शुक्र	स्व	
22	6	तृती प्र	शनि	स्व	विवाह।
23	7	चतु प्र	रवि	स्व	संकट चतुर्थी, करवा चौथ, विबाह।
24	8	पंच प्र	सोम	स्व	यज्ञोपवीत।
25	9	षष्ठी प्र	भौम	स्व	भौम मास।
26	10	सप्त प्र	बुध	स्व	शुक्रास्त।
27	11	अष्ट प्र	गुरू	स्व	
28	12	नव प्र	शुक्र	स्व	
29	13	दश प्र	शनि	स्व	
30	14	एका प्र	रवि	स्व	रमा एकादशी।
31	15	द्वा. प्र	सोम	स्व	

चिन्ह जानकारी : दि-दिन तक। प्र-रात तक। स्व-अपने दिन।
पूर्व-पहले दिन। सर्वार्थसिद्धि योग।

(Prepared by Pandit Prem Nath Shastri)

UNIQUE OPPORTUNITY TO OWN A PLOT AT KONGPOSH ENCLAVE, JAIN NAGAR, DELHI AT UNIMAGINASBLE RATES AND ON INSTALMENTS ; CONSTRUCTION OF HOUSES/WALLS UN DERTAKEN.

MAIN FEATURES :

- Situated in DELHI opposite ASIA's biggest colony, Rohini Sector 22.
- Just 45 minutes drive from CONNAUGHT PLACE/RAILWAY STATION.
- Developed on 2000 Kanals of Agriculutural land with more than 4000 plots already sold out
- Above 300 families already living and hundreds of constructions going on.
- Metalled 30 ft. wide main road and open lanes of 20 ft. and 15 ft. on 2 sides.
- RUNNING Public School, Park, Charitable Hospital (Foundation stone laid), Commercial complex, worshiping places etc. Additional park, Community Centre and Temple in Kongposh Enclave.
- Probably the only Kashmiri Colony which has been recommended by Delhi Govt. for regularisation.
- Pure Sweet WATER & ELECTRICITY : Regular DTC and Private Bus services
- Above 800 families from Kashmir have purchased plots and 15 families have shifted to their houses & ten more are ready for possession.
- The allottees include Judges, Lawyers, IAS & IPS officers, Doctors, Engineers, CA's, Professors, Bank Officals, Businessmen, Politicians, NRIS and others.
- Welfare committee of Kongposh Enclave elected by Allottees for development work of the colony.
- Fondation stone of PARK& TEMPLE of KONGPOSH ENCLAVE laid by VIPs.
- Plot of 100 sq. yds for Rs. 60,000/- only Booking with Rs. 15,000/- & the balance within 11 months with just 10% interest. Fossession at the ime of booking. Heavy discount on cash down payments.
- 40% appreciation within one year.
- Construction of Houses/Boundary walls is compulsory which can be done either of one's own or through the scheme of the co. @ Rs. 253/- per sq ft. with guaranteed standard construction.
- Construction 2 plus 5 i e. 7 ft high cemented wall, one pacca room of 10'X12', handpump, iron gate & name plate for Just Rs. 30,000/- & Rs 20,000/- on 200 & 100 sq. yd. plots respectively.
- COMMERCIAL COMPLEX ready for possession. One shop for just Rs. 45,000/- Shops have already opened in the colony.

NOTE ; THE RATE OF CONSTRUCTION IS GOING TO BE ENHANCED BY 10% W.E.F. NEXT MONTH DUE TO EXCILATION IN BUILDING MATERIAL.